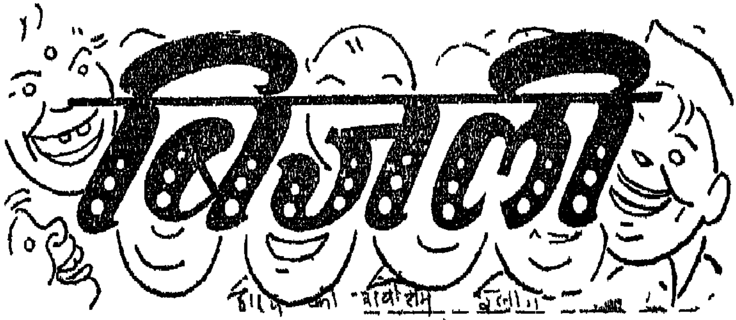
बिजली

हास्य रस की कवितायें

बेढब बनारसी





[हास्य रसकी कवितायें]

प्रकाशक—

कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स,

ज्ञानवापी, वाराणसी।

वितरक—

बम्बई बुक डिपो,

१६४।१, महात्मा गाँधी रोड,

कलकत्ता–७

तथा

बिहार ग्रंथ कुटीर

खजान्ची रोड

पटना–४

मूल्य—

ढ़ाई रुपया

प्रथम संस्करण

दीपावली

२०१३ वि०

मुद्रक—

काशी मुद्रणालय

विश्वेश्वर गंज, वाराणसी–१

बिजली

बहुत दिन हुए एक शेर पढ़ा था, उसका एक मिसरा याद है, "दिलपे बिजली गिर पड़ी ऐसी हंसी अच्छी नहीं"। किसीकी हंसी बिजलीके समान हो सकती है, परन्तु इस बिजलीमें जो आपके सामने चमक रही है ऐसी कोई बात नहीं है जिसमें आपके हृदयमे धड़कन उत्पन्न हो अथवा कलेजा कांपे। यह बिजली सावन भादोंमें ही नहीं, बिना बरसातके भी चमकेगी और आपके अधरोंको बरबस अलग करनेकी चेष्टा करेगी।

इन रचनाओंका एक मात्र प्रयोजन मनोरंजन है। दुर्भाग्यवश उन लोगोंसे सहमत होनेमें असमर्थ हूँ जो चाहते हैं कि कविताका कुछ उद्देश्य होना चाहिये। यों तो हंसाना किसी प्रकार साधारण बात नहीं है वह भी उद्देश्य ही है परन्तु यह रचनाएं ऐसी नहीं हैं जो किसी प्रकारका संदेश दें। संदेश हमारे नगरमें अनेक दूकानोंपर बिकता है और मंहगा भी नहीं है। उसके इच्छुक वहां जाकर अपनी मनोकामना पूरी कर सकते हैं। इन पृष्ठोंमें तो दवाकी टिकियां हैं जिन्हें लेकर आप अपनी आयुमें कुछ वृद्धि कर सकते हैं।

सिवाय तुलसीदासके जिन्होंने जन्मके समय राम राम कहा था, जन्मते समय सब लोग रोते हैं, विवाहके समय नहीं तो विवाहके बाद अधिकांश लोग रोते हैं, मरते समय अपनी आंखोंसे भी आंसू निकलते हैं और दूसरेको भी मनुष्य रुला कर जाता है। इसलिये कुछ हंसनेका क्षण भी होना आवश्यक है। जितने मिनट आप हंसते हैं उतने मिनट आपकी आयु बढ़ती है। यदि आप आरोमाइशीन, टैरामाईशीन, स्ट्रेप्टोमाईशीन ले चुके हों और स्वास्थ्यमें वही अवस्था हो जो पाकिस्तानकी इस समय है

तब इस पुस्तकको पढ़िये। आपको लाभ होगा इसमें संदेह नहीं। डाक्टरों से मेरा निवेदन है कि जहां नुसखेमें इंजेकशन तथा गोलियोंके लिये लिखते हैं नीचे इस पुस्तकका नाम भी लिख दें। रोगीके बिस्तरपर यह रहैगी तो और इलाजके साथ साथ बिजलीसे इलाज भी होता रहेगा।

स्वस्थ व्यक्तियोके लिये तो यह पुस्तक उसी प्रकार होगी जैसे काली आंखोंमें सुरमा। फिर भी संभव है कि इसे पढ़कर किसी-किसीको हंसी न आये। वह यदि रचयिता के पास अपना नाम भेज देंगे तो वह उनके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करेगा। प्रार्थनामें सुना बड़ा बल होता है।

—'बेढब' बनारसी

दीपावली, २०१३

निर्देशिका

प्रस्तुत पुस्तक बेढब बनारसीकी नयी पुरानी हास्य कविताओं का दूसरा संकलन है। इसके पहले 'बेढबकी बहक' आपके सम्मुख आ चुकी है। बेढब जी हिंदीके अकबर हैं। हिन्दीमें हास्य रस के सर्वश्रेष्ठ लेखकों तथा कवियोंमें आपका प्रमुख स्थान है। गम्भीर मुद्रामें भी हास्यका पुट आपकी विशेषता है। आपकी उपमाएँ बेजोड़ हैं।

शीघ्र ही हम बेढब जीका एक मात्र हास्य एकांकी प्रहसनका संकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। हमारा उद्देश्य है कि हास्य साहित्यकी कमीकी पूर्ति हिंदीमें की जाय। इसमें यह पुस्तक इस शृंखलाकी एक और कड़ी होगी ऐसा विश्वास है।

—प्रकाशक

बिजली

बन्दना

शारदे आज यह वर दे
नैनोंसे भी तीखीतर हो
शिशुओंसी सर्वथा निडर हो
व्यंग-विनोद-हासका घर हो
तुझसी ही हे देवि अमर हो

इस निब-वालीको मैं जैसा चाहूँ-वैसा कर दे

इसमें रंग भरा हो काला
किंतु जगतमें करै उजाला
जहाँ बनज हो रोनेवाला
वहाँ गिरै यह बनकर पाला

फाड़ै यह पाखंड—दंभके तने हुए जो परदे

जैसी टेढ़ी अलकें काली
मानों ऐंठी कोई व्याली
हो यह टेढ़े शब्दों वाली
किंतु नहीं हो विषकी प्याली

इससे सुधा-बूंद बरसा अधरोंपर सबके धर दे

भरा रहे रत्नाकर इसमें
रसका भर दे सागर इसमें
पाएँ लोग चराचर इसमें
मस्तीके हों आखर इसमें

जगको करदे मादक इसमें वह मादकता भर दे

चूमे क्षितिज और अंबरको
नक्षत्रोंके लोक प्रवरको
करे पराजित यह निर्झरको
छूले मानवके अन्तरको

उड़े कल्पनाके समीरपर इसको ऐसा पर दे

मूर्ख मनुजकी वाह-वाहसे
बिना हृदयवाली निगाहसे
पैसोंकी स्वादिष्ट चाहसे
इन तीनों सागर अथाहसे

इक्यावन नम्बरवाली यह पार पारकर दे

मैं

काशी अविनाशीका अदना निवासी एक,
कृष्णदेव नाम, मगर रंग नहीं काला है,
सेवक सरस्वतीका,
दास दयानन्द-का हूँ,
टीचरीमें निकला दिमागका दिवाला है।
काव्य लिखता हूँ नहीं हँसनेकी चीज़ निरी,
रचनामें व्यंग
औ विनोदका मसाला है;
पावन प्रसाद 'दीन' जी का
मिला 'बेढब' है,
सूर हूँ न तुलसी पंथ मेरा निराला है।

कहा—सुनी

भगवानसे

मुरलीको राधिकाके करमें सपुर्दकर,
हाथमें हवानाका सिगार एक लीजिए।
दूध–दही–माखनको करके सलाम आप,
प्रातःकाल चाय रात काकटेल पीजिए।

कुबरी औ राधिकाको शीघ्रही डिवोर्स कर,
सिनेमा-स्टार संग लेके रास कीजिए।
साथ प्लेन लेके नाथ उड़िये उसी पर, है—
गरुड़ पुराना उसे गोली मार दीजिए।

रास रंग गोपी संग भूल जाते सारा तुम,
होती बेकारी और होता यदि ठाला तुम्हें।
छूट जाती चोरी सब दही छाछ माखनकी,
यू०पी० की पुलिससे पड़ता जो पाला तुम्हें।

देखते उठाना गोबरधन तुम्हारा हम,
मिलता जो खानेको घी भी घासवाला तुम्हें।
गोकुलको छोड़ आज मथुराको जाते यदि,
तुरत तलाक़ दे देतीं ब्रजबाला तुम्हें।

बांसुरीको बहा देते यमुनामें बंशीधर,
सुन पाते आप जो कहींसे ध्वनि बैंडकी।
फेंकते सुदर्शन-चक्र रद्दीकी टोकरीमें,
सिगरेटसे शोभा बढ़ाते निज हैंडकी।

सिनेमाको देख भूल जाते ब्रज-बीथियोंको,
भूल जाते गीता, देख नीति इंगलैंडकी।
टेम्ज़के किनारेके सैंड देख ब्रज-रजको,
भूल जाते याद नहीं आती निज लैंडकी।

मोर पंख मुकुट है जंगली तुम्हारा यह,
काले केस ऊपर मैं हैट धरवाऊँगा।
काछनी दुपट्टा बनमाल, लाल, सभ्य नहीं,
लंदनका सूट, गले टाई पहनाऊँगा।

बंगलेमें मुझको सिंहासन मिलेगा नहीं,
कौच है चमड़ेकी उसपर बैठाऊँगा।
बीसवीं सदीका ग्रेजुएट युवक हूँ एक,
अपटुडेट होंगे तब मस्तक नवाऊँगा।

राजनीतिवाले हम देखते तुम्हारी नीति,
द्वारिकामें होते यदि मसजिद शिवाला।
गीताकी तुमको भूल जाती फिलासफी सब,
अलिफ-बे पढ़ना जो पड़ता नंदलाला।

देखते हम कैसे निपटती है बंशीधर,
मिलता तुम्हें जो कोई आई.सी.एस.वाला।
होते यदि बीसवीं सदीमें आज भारतमें,
पूछता न कोई, जग कहता तुम्हें काला।

अपनी नगरीकी एक झांकी

कबीरचौरासे भदैनी

एक

खाना खा कर

चार बजे जब स्वर्णमयी किरणोंसे रंजित

अवनीतल पर करता प्रस्फुटित,

रश्मि प्रकाश, वह अनन्त द्वारका रक्षक।

बहुत मुलायम जैसे मखमल

जूता टोपी कोट पहन कर,

छड़ी लेकर,

चला भदैनी सीधे निज नाक सामने।

जूता चरमर-चरमर करता,

मानो किसी हृदय तन्त्रीका सरल सुरीला राग।

दो

मिलने जाना था,
मुझको निज प्रेयसिसे, जिसकी सुन्दरताका आभास,
झिलमिल-झिलमिल होता था अवसान,
देख जिसे दृष्टि मादकता मज्जित होकर,
नीरव स्वरमें करने लगती थी गान।
परन्तु छलकती छलछल आंखोंमें था उसका चित्र
चल रहा था दीर्घ निश्वास
मुझे था पूर्ण विश्वास
करेगी वह मेरा सम्मान।

तीन

धूलि धूसरित सुन्दर सड़कें,
अस्पतालकी ओर चले
राहमें मिलीं मोटरें
तेजपुंज वाणीसे पीन
करती थीं अभिसार
परंतु ध्यान विवर्जित मर्मस्थलकी विकट वेदना
लिये चली जाती थी मुझको

सीधे चौक
जिधरसे जाना था।
अस्पतालकी विकट मूर्ति थी प्रलय साकार
चांदीकी है माया सारी जहां न आदर निर्धन जनका
बीमारोंका जहां विकल उच्छ्वास,
दशा पश्चिमकी।
उसके बाद, 'आज आफिस
जहां भीतर धड़ धड़ मशीनका शब्द
अंतर पटका खटपट झटपट झटपट
बाहर भी आता था—
फिर लोहाका था बाजार
उस स्वरका क्या संधान
कहां मिलैगा ऐसा गान।
परन्तु था वह वज्र कठोर कर्ण कुहरोंमें।
मेरा हो गया अतः नत मस्तक।
वहाँसे मैदागिनकी चौमुहानी चला
नीरव था जैसे दिगंत आकाश
केवल एक वैशाख नंदन
करता करुणा क्रंदन।

वहाँसे बढ़ा चौककी ओर,
शांत भावसे निश्चल
जैसे मुर्देका अन्तस्तल।
राहमें सड़क नयी, पर व्यक्त भाव था
जैसे नूतन वस्त्र शोभित साभिमान
पड़ी थी गिट्टी और सभी सामान।
आर्य समाजका मंदिर
जहाँ बहस सुननेसे सिरमें आजाता हैं चक्कर
तत्पश्चात नवीन सुशोभित सिनेमा घर है,
जहाँ टिकट लेनेका हाहाकार,
रोदन ध्वनिसे जैसे बालक दीन।
पर शिथिल तस्वीरें हैं।

चार

मित्र मिले मुझे एक
वहींपर,
कहा, चलो युग मित्र आनंद पुलकित—
आज देख लें एक सीन प्रिय अभिनव
होगा अच्छा ही अनुभव।
परंतु मैं था मतवाला उस अनुरागिनीका,

चाह जिसकी मृगतृष्णासा व्यर्थ भटकना कहते हैं लोग।

अस्तु मै बढ़ा !

गाड़ियोंकी है भरमार

तीव्र गति सबकी बंटाधार।

उधर कलरव, कूजते जैसे पिक विहंग,

पंचम, सप्तम, अष्टमकी तान

चौक पहुँचा, क्या दृश्य सुन्दर !

क्रीड़ाका आगार—

सभी लोगोंकी है भरमार

कहीं गजरेका है उपहार

लीजिए पंखा-ताला-कुलफी-गमछा-जूता

और अनेक मेवोंसे लदी जहाँ दूकानें हैं।

यहींसे एक गली है दाहिनी ओर

जहां मोहका अस्त्र, रूपसी सुन्दर, बढ़िया वस्त्र

परिवेष्टित अनंगकी प्रतिमाएँ हैं।

पैर बढ़ाता जैसे छन्दोंके चरण—

चला मैं।

क्योंकि,

तेज पुंज वह, ज्योतिका गोला आधार

चल रहा था गगन तलमें,
धरा गर्भमें कर रहा प्रवेश।

पाँच

रास्तेमें इक्के भी खोजे
पर निराकार सा, कहीं न सुन्दर
सुघर मनोहर
घड़ घड़ शब्दोंका वह अनुपम राग
मुझे सुनाई पड़ा।
अस्तु सारी आशाओंको त्याग,
बढ़ा लक्ष्य पर अपने—
जगाते उस जीवन ज्योतिको,
झर झर झर झर जिसके स्मरण मात्रसे
होता है अश्रुपात।
अनेक दुकानें चौकमें सजी
वस्तु विस्तृत, समस्या जटिल, क्रय विक्रयकी,
कटरोंको करके पार
घूमकर दायीं ओर
चला और आगया विश्वनाथ टार्कीके पास।
जहाँ अनेक युवक गए प्रेम पाशमें बद्ध

तृप्ति हीन तृष्णा युक्त घुसे चले जाते थे।
रास्तेमें है स्वादिष्ट कचालूकी एक दूकान
रसास्वादन जिसका है मोक्षका प्रथम सोपान ।

छः

वहाँसे गोदौलियाकी सुन्दर चौमुहानी पर पहुँचा।
रजोगुणका रजपूर्ण रास्ता
चला,
थक गया था !
पर उन्मीलनकी आशा, प्रेम निमंत्रण—
के भरोसे चला जाता था ।
सुन्दर सीनरी हुई यहाँसे आरम्भ
कुंचित केश युक्त कुटिल नयनोंसे पूर्ण
बंग देशवासी नर नारीके गढ़में,
हुआ प्रवेश।
यहाँकी सुन्दर सुष्ठ सुमधुर भाषा
कर्णोंको कोमल ज्यों वीणाकी झंकृति
अथवा नुपुरकी रुनझुन रुनझुन
हृदयको तरंगोंसे करती थी हिल्लोलित।
यहाँसे आगे नीरव-शुष्क और रसहीन

रास्ते निर्बल-पीड़ित-शंकित जनसे शून्य।
चले चलिये कुछ थोड़ी दूर
हरिश्चंद्रका सुन्दर घाट
बेच दिया जीवन धन
जहाँ माया सारी कम्पित, भयभीत।

वहाँसे आगे थोड़ी दूर
भदैनीका है सुंदर दृश्य,
नहीं है शहर बल्कि है गाँव,
पड़ोस विश्वविद्यालयका।
वहाँपर जाकर कोमल स्वरसे युक्त
पुकारा अपनी प्रेयसि को।

अधीर था मैं नितांत औ क्षुब्ध
हृदय चलता था जैसे मोटरकार
चपल थे कान कि जल्दीसे सुने
मधुर मंद वीणासा कंपित स्वरारोह
नयनका मनोरंजन हो।
कर किंकर करसे उसका स्पर्श स्वर्गमय

जीवन अविरल—

मैं बनाऊँ।

चमक, चौंक द्युतिसी निकली

और कहा-तुम क्यों आये यहाँ,

फौरन यहाँ से चले जाओ

नहीं, होगी पूरी मरम्मत।

उसका वचन कठोर-पवि मेरे कुसुमसमान

हृदयपर पड़ा—

जैसे ओखलीमें मूसल।

जुलाई, १९३९]

बेकार जीवन

जीवनमें मैं कुछ कर न सका।
देखा था उनको गाड़ीमें
कुछ नीली नीली साड़ीमें
वह स्टेशनपर उतर गयीं
मैं उनपर थोड़ा मर न सका।

महिलाओंकी थी भीड़ बड़ी
गगरा-गगरी था लिए खड़ी
घंटों मैं कलपर खड़ा रहा
फिर भी पानी मैं भर न सका।

सिनेमा तक उनका साथ किया
मैंने उनका भी टिकट लिया
भागीं मेरा भी टिकट लिये
मैं जा सिनेमा भीतर न सका।

वह गोरी थीं, मैं काला था
लेकिन उनपर मतवाला था
मैं रोज रगड़ता साबुन—
पर, चेहरेका रंग निखर न सका।

बिजली

अंग्रेजी ड्रेस उनको भाया
इसलिए सूट भी सिलवाया
सब पहन लिया मैंने लेकिन
नेकटाई-नाट सँवर न सका

सीधे रणमें बढ़ सकता हूँ
फांसीपर मैं चढ़ सकता हूँ
पर बेढब तिरछी चितवनके-
सम्मुख यह हृदय ठहर न सका।

बसंत पंचमी १६३६]

बसन्त ऋतु

आ गया मधुमास आली
दिवस भर वह पाठ पढ़ते
नित्य प्रात: हैं टहलते
और आधी रात तक तो
जागती हैं सास आली; आगया-मधुमास आली।

जब कहा-मुझको दिखा दो
एक दिन सिनेमा भला तो;
बोल उठे संध्या समय
लगता हमारा क्लास आली; आगया मधुमास आली।

ढाक और कचनार फूले
आमके भी बौर झूले
रट रहे हैं वह मगर
तद्धित-कृदंत-समास आली; आगया मधुमास आली।

'सेन्ट' माँगा; 'सोप' माँगा,
हृदयको कुछ 'होप' माँगा
वह यही कहते रहे—
हो जाँय जब हम पास आली; आगया मधुमास आली।

८-३-१९३९]

अवकाशकी कमी

सन्ध्याको मैं रह न सकूँगी।
एक मित्रने बुलवाया है,
कुछ विरोधमें कह न सकूँगी।
विद्यापतिका फिल्म आया है,
हम दोनोंको वह भाया है।
दुःख होगा यदि साथ न जाऊँ,
जिस दुःखको मैं सह न सकूँगी।
मैं तो हूँगी शीघ्र रवाना,
आज बना लेना तुम खाना।
आज रसोईकी धारामें,
प्रियतम, मैं तो बह न सकूँगी।
शरबत भला बनाऊँ कैसे,
मोल मँगा लो देकर पैसे
अभी अभी क्यूटेक्स लगाया है
मैं दधिको मह न सकूँगी।

३-५-३६]

मनुहार

आज जाओ मान आली।
बात करनी है मुझे—
लाओ इधर तो कान आली।
घुल रहा हूँ स्नेहमें, अलि,
लो हृदयके गेहमें, अलि।
तुम हमारे वास्ते-
बन जाओ अमृतबान आली।
फूल गुलगप्पा बनो मत
नैन बानोंसे हनो मत
ब्राह्मण भोजन बनो तुम
मैं बनूँ यजमान आली।
लूटती हो दिल हमारा,
क्या किया इसने तुम्हारा
मैं नहीं हिन्दू बिचारा
तुम न हो अफगान आली।
हे प्रिये तेरे प्रणयमें,
चोट ऐसी है हृदयमें,
काटता जिस भाँति कोई
नया पाद-त्राण आली।

[१७-५-३६]

नीरा

संतो छक कर पीयो नीरा।

नीरा पीकर हनूमानसे बनजाओ तुम बीरा।

तड़के उठ जो नीरा पीये, सौसे कम वह कभी न जीये,

आत्मज्ञान बढ़ जाय, बने मन जैसे उज्ज्वल हीरा।

कोई छाने भंग दूधिया, कोई ढाले ह्विस्की बढ़िया,

हम तो प्रेमी हैं नीराके मीठी जैसे शीरा।

सत्यग्राही जोश यह भर दे, ज्योति प्रकाश हृदयमें करदे

ले पहुँचा दे निश्रेयसकी सरिताके शुभ तीरा।

नीरा पीकर बनो सिकन्दर, नीरा पीकर बनो पुरन्दर

नीरा पीकर बन जाओ तुम तुलसी-नरसी—मीरा

लेना रामराज हो जल्दी, नहीं फिटकरी लगे न हल्दी

पीं नीरा बोलो बजरंग बलीकी जय, रघुबीरा

२६-५-३६]

जोहता हूँ बाट रानी

शीघ्र आओ प्रेमका मेरे न उलटे टाट रानी।

है असह्य वियोग बाले
है निशा टलती न टाले
करवटें लेते हुए— टूटी हमारी खाट रानी।

बोलनेकी बात तो क्या,
पत्रका उत्तर न भेजा
क्या कहींकी बन गई हो आजकल तुम लाट रानी।

धर्म भी थोड़ा कमाऊँ
और दर्शन साथ पाऊँ
एक दिन आओ सवेरे तुम अहल्या घाट रानी।

विश्व मैंने है बिसारा
गीत बस अब है सहारा
मैं जुदाईमें तुम्हारी बन गया हूँ भाट रानी।

देख क्या करते बिचारे
जब बिना दर्शन तुम्हारे
मिल गये कितने कहानी-लेखकोंको प्लाट रानी
जोहता हूँ बाट रानी।

३-६-३६]

निराशा

विश्व सूना आज भगवन
हो गयी दुनियाँ नहीं मालूम,
क्यों नाराज भगवन।

पास हूँ एम. ए. एल एल. बी.,
और उसपर पास बी. टी.,
नौकरी मिलती नहीं फिर भी
कहीं पर आज भगवन।

कर्ज ले कपड़े मँगाये
सूट फिर उनके सिलाये
माँगता दरजी सिलाई
और दाम बजाज भगवन।

कट गया सारा वकेशन
भेजनेमें अप्लिकेशन
बस इसीमें कर रहा था,
दिवस-रात रियाज भगवन।

अरज़ियोंकी कापियाँ हैं
डिगरियोंकी गठरियाँ हैं
पर नहीं घरमें कहीं पर
सेर भर भी नाज भगवन।

प्रेम पथमें लोग चलते
मोटरोंमें हैं मचलते
और सोनेको यहाँ
मिलता न एक, 'गराज' भगवन।
विश्व सूना आज भगवन।

७–६–३६]

कौन !

जीवन पथमें वह कौन मिला
जो हृदय ले गया चुपकेसे
नयनोंसे अपने भंग पिला

कच काजल सा बंगाली है
चेहरा कुछ कुछ नैपाली है
रहता है हृदय सरोवरमें मेरे,
उसका मुख कमल खिला।

सुन्दर है भोली-भाली है
वह मानो सुरपुर वाली है
पर घाव किया दिलपर ऐसा
जो बेढब घाव कभी न सिला।

वह बिषकी पूरी प्याली है,
या अमृतकी परनाली है,
जिसके दरशनसे मरता हूँ
है याद उसीकी रही जिला।

रोगीके हेतु मुवाली है
मस्तोंको वह क़व्वाली है
मेरे हित है पत्थरका दिल
जो स्नेह-स्पन्दनसे न हिला।

२१-६-२६]

बरसात

आज संगिनि मान कैसा
गगनमें घन घोर आया,
मस्त कुछ संदेश लाया,
मैं लिये चमचम खड़ा हूँ,
पर न तुमने एक खाया
इस समय दिखला रही हो हे प्रिये अभिमान कैसा।
बूँद रिम-झिम गिर रही है,
हो गयी जीवित मही है
मैं नहीं लाया तुम्हारे
वास्ते साड़ी, सही है
यह जरा देखो हमारे हाथमें है पान कैसा।
आँखमें रिस ला रही हो,
होंठमें मुसका रही हो,
यह बताओ इस समय तुम
क्यों मुझे बहका रही हो
तनिक हंस दो औ' सुनो है चातकोंका गान कैसा।
मानमें माना बड़ी हो
झुक गया मैं, क्यों अड़ी हो
पास आओ दूर करमें
क्यों लिये लीडर खड़ी हो
क्या करोगी जान कर है चीन या जापान कैसा।

२८-६-३६]

२

आओ शीघ्र खोलो द्वार
वृष्टि भीषण हो रही है, आरही बौछार।

स्कूलकी मैनेजिंग कमेटी–
की तरह तुम अजब टेंटी
क्यों प्रिये तुम वहाँ लेटी, कर रही हो रार।

भीगता है नया सोला
द्वार, पर तुमने न खोला
पढ़ रही हो छंद रोला, बैठकर बेकार।

प्रेमकी बस टेम तुम हो
हेम तुम हो, मेम तुम हो,
क्या कहूँ क्या 'लेम' तुम हो, प्रिये प्राणाधार।

चमकती सौदामिनी है
क्यों न उठती कामिनी है
कर रहा मघवा हृदयपर घोर वज्र प्रहार।
आओ शीघ्र खोलो द्वार

१२–७–३६]

उलटा संसार

आज उलटा जग बिचारा।
मांगता है रूसका कर
बढ़-कर इंगलैंड होकर,
फेंकते उस ओर चेंबरलेन
हैं स्वादिष्ट चारा।

बोस होकर आज क्रोधी
हैं प्रोहिबिशनके बिरोधी
कांग्रेस प्रोग्राम परिवर्त्तन
न था जिनको गवारा।

बन गये भिक्षुक गृहस्थी
होगए हरिजन अवस्थी
खुल रहे मंदिर अछूतों—
के लिये सरकार द्वारा।

हुआ बिकना बंद ठर्रा
सड़क पर होता तबर्रा
जाग उठे हिन्दू, यही है
नव्य जीवन युक्त धारा।

होरहा संसार उलटा
जगतका व्यवहार उलटा
पर न 'बेढब' आज भी यह
भाग्य कुछ पलटा हमारा।

[१६-७-३६]

प्रणय-पीर

प्रणयमें क्यों होती है पीर—?

आँखें कोमल, जैसे शतदल
फिर क्यों हृदय बेध देती हैं जैसे तीखे तीर—

छीना बरबस, मेरा सरबस
जमींदारसे छीनी जाती है अब जैसे सीर—

हृदय हूक है, वदन मूक है
पाकिस्तानी बातें सुन ज्यों होते हिन्दू वीर—

अगर न माना, उसने आना,
अंतिम अनशनकी बारी है धरूँ कहाँ तक धीर—

प्रेम राहमें, आह-आहमें
मर जाना है, नाम उसीका रटते, जैसे कीर—

२—८—३६]

कैसे मिलन हो ?

प्रिये आओ हृदय बनमें—

प्रिये यह सूना पड़ा है
शुष्क यह रीता घड़ा है
प्रेमका वर दो इसे तुम
स्नेहसे भर दो इसे तुम

हर्षसे उछले उछलते पीन नर जैसे फिटनमें

चाय पीकर तुष्ट होना
'हारलिक'-से पुष्ट होना
बहुत 'कोकोजेम' मिलेगा
कमल मुख जिससे खिलेगा

साड़ियाँ भी मांज दूंगा तनिक आओ तो सदनमें

'क्लीन' मेरा 'फेस' वाले
है तुम्हींसा भेस वाले
हो तुम्हें यदि अधिक रुचिकर
मैं बढ़ा लूँ बाल सिर पर

फिर चलें दोनों किसी अनजान बीहड़ बिजन बनमें

और जगतीका अगर सुख
है तुम्हारे लग गया मुख
चलो नेता बने दोनों
लीडरीमें उनें दोनों
और बन मेम्बर करें भाषण किसी कौंसिल भवनमें

दूध तुमको मानता हूँ
और मैं जलही रहा हूँ
प्रेममें क्या फेल होगी
पास आओ मैं वियोगी
क्यों न अपनेमें मिलालो तुम मुझे फिर एक क्षनमें

प्रिये आओ हृदय बनमें—

[१०–८–३६]

मुसकान

आज प्रिये क्यों मुसकाती हो

ऐसी मृदुल हंसी छायी है
ऊषा जिसकी परछांई है
क्या है आज ! हास्यमय नयनोंकी रस-प्याली छलकाती हो

पत्र बुलानेको क्या मौका
या फ्री पास किसी सिनेमाका
पास तुम्हारे आया है, पर मुझे नहीं तुम बतलाती हो

किसी पत्रमें चित्र छपा क्या
जंपर कोई नया नपा क्या
हो प्रसन्न, भोजन कर जैसे ब्राह्मण, भूखा देहाती, हो

बनवाना है गहना कोई
मनवाना है कहना कोई
तरल हंसी अधरोंमें भरकर क्यों अधरों को ललचाती हो

सभानेत्री चुनी गयी हो
क्लास फर्स्टमें प्रथम हुई हो
बोलो हम भी करें पान रस जिसकी सरिता ढुलकाती हो
आज प्रिये क्यों मुसकाती हो ।

२३-८-२६]

पहचानी राइटिंग

यह राइटिंग मेरी पहचानी—

है एवर शार्पसे लिखी हुई
जिसको पाकर तुम सुखी हुई
जिसका न अभी तक दाम दिया
जिसने मुझको बदनाम किया
पछताता हूँ अब तक निशिदिन कैसी की मैंने नादानी

अब तक बिल लेकर आता है
प्रतिदिन मुझको धमकाता है
हर हिटलर जैसे पोलोंको
पंडित हरिजनके गोलोंको
जल्दी यदि दाम चुका न सका उसने दावेकी है ठानी

यह अक्षर काले-काले हैं
अथवा कुंतलके जाले हैं
बैठी यह भ्रमरावलियाँ हैं
या कस्तूरीकी डलियाँ हैं
या हब्शी अबलाओंकी अवली झूम रही है मस्तानी

लिपि खूब लिखी है यह काले
अक्षर हैं या भैंसे काले
क्या है यहाँकी लिपि नवीन
पढ़ता हूँ अक्षर बीन-बीन
कैसे पढ़ पाएँगे इसको प्रोफेसर या पंडित या ज्ञानी

इस भाँति पत्र मत लिखो प्रिये
घूमूँगा इसको कहाँ लिए
जब इसको पढ़वाना होगा
काका जी को लाना होगा
फिर उन्हें बुलानेको हमको पढ़ना होगा हिन्दुस्तानी

२६-८-३६]

मेरा जीवन

जग रोता है मैं हंसता हूं !

आँखोंसे लुढ़काये न कभी
मैंने गीले गीले मोती
आँसूकी अविरल धारासे
भींगी न कभी मेरी धोती

अपलक नयनोंसे तारोंको
गिन कर न बिताई रात कभी
ले-लेकर गर्म उसासोंको
मैंने न सुखाया गात कभी

यह पागलपनकी बातें है
इनमें न कभी मैं फंसता हूँ
जग रोता है मैं हंसता हूँ

कोई मिलनेकी चिन्तामें
नित सांझ सबेरे रोता है
कोई उपहारोंकी गठरी
अर्पित करनेको ढोता है

कोई कविका छन्द लिए
जाता है कहीं सुनानेको
कोई चिट्ठीको बंद लिए
जाता है कहीं मनानेको

मेरा है मस्तीका जीवन
मस्तीमें ही मैं बसता हूँ
जग रोता है मैं हंसता हूँ

आँसू पीते हैं लोग यहाँ
ग़म भी खाते हैं लोग यहाँ
कितने 'लव'-में डिसपेपटिक हैं
बहुतोंको टी. बी. रोग यहाँ

कितनोंने केवल दर्शनके हित
खाना-पीना छोड़ दिया
मैंने तो इस जीवनमें डट-
कर भोजन दोनों जून किया

फिर चार बार रसगुल्ला खाता
उसपर खाता खस्ता हूँ
जग रोता है मैं हँसता हूं।

कोई वियोगकी असह वेदना—
में मर-मर कर मूक बना
है हृदय किसी बेचारेका
अरमानोंका संदूक बना

विश्राम चाहते हैं कितने
तिरछी चितवनकी छायामें
हैं तीर छिपाये बीर बहुत
बरुनीकी अपनी कायामें

है यहाँ हृदयमें हास्य भरा
मैं तो विनोदका बस्ता हूँ
जग रोता है मैं हँसता हूँ

६-६-३६]

अलटिमेटम

किस भाँति चले जीवन-गाड़ी
ह्विसकीका पीना बंद हुआ
बाजार भंगका मंद हुआ
गाँजा पर योगीकी छाया
अाफू मुसलिमके मन भाया
बस भले मानुसोंके पीनेकी एक बच गयी है ताड़ी

छिड़गयी लड़ाई योरपमें
है चीनी नहीं यहाँ कपमें
महँगा हो गया नमक चटका
भय लगता हैं वेतन 'कट'-का
जीवन तरणी है जर्जर इसपर यह बंगालकी खाड़ी

जगतीमें चारों ओर समर
है युद्ध हमारे भी घर पर
बन गयीं श्रीमती पूरी बम
मुझको है मिला अलटिमेटम
मैं कल जाऊँगी मैके लाये तुम न अगर जंपर-साड़ी

ता० १३-६-३६]

सखी का वचन सखी से

हो रहा है युद्ध री सखि !

है हृदय चंचल उन्हींको देखनेके हित निरन्तर
जब हुए सम्मुख नयन, तब पड़ गया संकोच-अन्तर
खोलकर जो बात उनसे मैं करूँ, कहता यही मन
बंद रहता मुख, अधरमें बस तनिक होता विकंपन
मौन पति जिस भाँति रहता, श्री मतीं जब क्रुद्ध री सखि

मैं उन्हें निर्देश करती नित्य तुम दाढ़ी बनाओ
व्यय करो पैसे तनिक निज सेफटी रेज़र मंगाओ
मानवोंसा मुख बनाओ मत बनो साही सरीखे
धर्मकी गठरी लिए वह बोलते हैं बचन तीखे—
किस तरह दाढ़ी बने जब तक न आये बुद्ध री सखी

क्यों नहीं मुझसे अकेलेमें कभी वह बात करते
चाल चलकर प्रेमकी मुझको नहीं क्यों मात करते
युद्ध उनसे चल रहा है, संधि अब तक हो न पायी
बंद क्या होगी नहीं जो चल रही ठंडी लड़ाई
प्रणय नगरीका अभी तक द्वार है अवरुद्ध री सखि

२७–६–३६]

तोता

मेरा यह प्यारा तोता है
लीगी झंडेसा हरा-हरा
मोटे पंडेसा भरा भरा
है स्निग्ध नासिका लाल लाल
जैसे पाउडरसे रंगे गाल
है हड़तालीसा चिल्लाता जब टेंटे करके रोता है

है कभी मौन यह गाँधीसा
है कभी नाचता आँधीसा
यह बात बातमें टिला है
तोता क्या है यह जिन्ना है
सुनता है तनिक न बात कभी जब पंख पसारे सोता है

कुछ अजब पंथसे नाता है
नव बधु-सा यह शरमाता है
मानो नवीन यह बाला है
सचमुच कुछ ढंग निराला है
मै सदा सनेही हूँ इसका फिर भी सन्तुष्ट न होता है

२३-१०-३६]

विनय

इस ओर भी हो तनिक करुणा कोर
क्यों बने हो वज्रसे मुझपर महान कठोर

की दया तुमने मिले आक्सिजन हाइड्रोजन उछलकर
की कृपा श्रीरामचन्द्र मिले विभीषणसे हृदय भर
फूल काँटोंसे मिले, वरदान यह भी है तुम्हारा
मिल रहे अनमिल सभी दिखला रहा है विश्व सारा
क्या पुकारोंमें हमारी कुछ नहीं है जोर

स्वर्गका सीधा टिकट तुमने अजामिलको दिया था
और कितने लोफरोंको भी शरणमें ले लिया था
मैं लघुत्तम ही सही पर दास मैं भी हूँ तुम्हारा
मैं बताता हूँ हृदयमें वास मेरे है तुम्हारा
वोट सेंसरका करूँ क्या पास तुम पर घोर

बन गये नेता छकौड़ी, शानकी अब ले रहे हैं
नाव बालूमें बहुतसे लोग अपनी खे रहे हैं
है न इतनी भी कृपा मुझपर, कहाँका न्याय भगवन
जन्मभर जिसको जपा, मैं पा सका उसका न दर्शन
क्या करूँ अखबारमें मैं भी मचाऊँ शोर

३१-१०-३६]

मिलनकी प्रार्थना

आज मिलनकी संध्या बाले
अपनी भोली मुसकानोंमें मेरा लघु जीवन बहकाले

युग-युगकी अभिलाषाओंको
व्याकुल मनकी आशाओंको
पूरी कर दे बंद न कर, निज-अधरोंपर गुडरैजके ताले।

मीठे यह हो जांय अधिकतर
रसमय बनें और अधराधर
प्रिये, रसीले ताज़े, ताजे आजा, दो रसगुल्ले खाले।

प्रिये मिलनका समय बड़ा कम
आतुर हृदय कर रहा 'वैलकम'
छुआ-छूत ज्यों हटा देशमें, वैसे तू आवरण हटाले।

आजा बैठ हृदयमें मेरे
क्या जाने फिर कौन सबेरे
बनकर गेहूँ और भूसे सा, मुझको-तुझको फिर बिलगाले।

८-११-३६]

भय

गगनमें घन घेर आया
रात है तिथि है अमावस
आक्रमण कर रहा पावस
नहीं दीपक भी यहाँ है
हे प्रिये माचिस कहाँ है
पास आओ लग रहा भय, काँपती संपूर्ण काया।

हो कहाँ इस कठिन बेला
मैं यहाँ सोया अकेला
क्या न दोगी तुम सहारा
हार्ट फेल न हो हमारा
मैं तुम्हें ऐसे समयके ही लिए था ब्याह लाया

हैं अंधेरेमें बड़ा सा
सामने कोई खड़ा सा
प्राण तुम चाहो बचाना
प्राण-प्यारी जल्द आना
दास बनता हूँ, तुम्हें लो आजसे मालिक बनाया

यह न समझो कर बहाना
चाहता हूँ मैं बुलाना
हृदय धड़-धड़ कर रहा है
स्वेद दो गगरी बहा है
शीघ्र आओ आ रही बढ़ती हुई है एक छाया

८-११-३६]

मान

बात करलो आज संगिनी
मिल गयी हो तुम अकेली
मिल गया है राज संगिनी।

समय शायद फिर न पायें
या यहाँ कुछ लोग आयें
बात करनेमें तुम्हें तो
फिर लगेगी लाज संगिनी।

जो कहो तुम वह करूँ मैं
दो कदम उससे बढ़ूँ मैं
कुछ तुम्हारी माँगका—
मुझको लगे अंदाज संगिनी

मान कितना भी करो तुम
क्रोध कितना भी भरो तुम
मैं मनानेसे न आऊँगा
तनिक भी बाज संगिनी

तुम कठोर परीक्षकसी
फेल छात्र समान मैं भी
मैं तुम्हारे अंकका—
कबसे बना मुहताज संगिनी

१५-११-३८]

वेदना

आह वेदना मिली बिदाई
निज शरीरकी ठठरी लेकर
उपहारोंकी गठरी लेकर
पहुंचा जब मैं द्वार तुम्हारे
सपनोंकी सुषमा उर धारे
मिले तुम्हारे पूज्य पिता जी मुझको कस कर डांट बतायी
प्राचीमें ऊषा मुसकायी
तुमसे मिलनेकी सुधि आयी
निकला घरसे मैं मस्ताना
मिला राहमें नाई काना
पड़ा पाँवके नीचे केला मची टूटते आज कलाई
चला तुम्हारे घरसे जैसे
मिले राहमें मुझको भैंसे
किया आक्रमण सबने सत्वर
मानों मैं भूसेका गट्ठर
गिरा गटरमें प्रिये आज जीवनपर अपने थी बन आयी
अब तो दया करो कुछ बाले
नहीं संभलता हृदय संभाले
शान्ति नहीं मिलती है दो क्षण
है कीटाणु प्रेमका भीषण
'लघ' का मलहम शीघ्र लगाओ कुछ तो समझो पीर पराई

५-११-३६]

प्रेमकी निराशा

प्रिये प्रेमको मत ठुकराओ

क्या तुम प्रिये वज्र हृदया हो
किस निर्दय गुरुकी शिष्या हो
मेरे त्याग और बलिदानों—
को तो थोड़ासा तुम मानो
कांग्रेससा समझो मुझको तुम भारतीय मुसलिम बन जाओ

प्रणय सिंधुका पार नहीं है
नौकामें पतवार नहीं है
प्रेमासवका लिए नशासा
चला जारहा हूँ मैं प्यासा
हिन्दू सभा समान विना जीवन का हूँ अब मुझे जिलाओ

तुमको मेरा प्रेम न भाया
मैंने यद्यपि सभी गवांया
मेरी जीवनकी अभिलाषा
चूर हुई, अब क्या है आशा
टी० बी० के कीटाणु सरिस मत तुम मेरे शरीर को खाओ

१२-१२-३६]

प्रथम मिलन

अब तनिक दो बोल दुलहिन

यह घड़ी संयोगकी है लो मधुर रस घोल, दुलहिन
आवरणका क्या प्रयोजन है प्रिये मुखपर तुम्हारे
गैसका यह मास्क है या हो प्रिये घूँघट सँवारे
है नहीं कुछ भय यहाँ अब दो तनिक मुख खोल, दुलहिन

बँध गये दोनों, मगर अनभिज्ञ हम-तुम हैं परस्पर
इस समय तो जान लें जब आगयीं तुम आज घर पर
मेमसी हो सुन्दरी या हो निरी तुम 'कोल', दुलहिन

कुछ कहो, बोलो प्रिये, क्यों थरथराती हो बताओ
मत प्रिये भूचाल धरतीका तुम अपनेको बनाओ
काँपता है देखकर यह दृश्य मेरा 'सोल', दुलहिन

मेल हिन्दू और मुसलिमका तुम्हें क्या आज भाया
डालकर घूँघट नया क्या भारती बुरका बनाया
भारती हो, यह निरा इसलामका है खोल, दुलहिन

बिजली

लालची लोचन ललकते देखनेको मुख दिखाओ
आज सौदा किस तरह हो प्रेमका मुझको सिखाओ
बेचता हूँ आज सस्ता लो हृदयको मोल दुलहिन

यह मिलनकी रात पहली, प्रेमका आसव पिला दो
आज स्वर दोनों हृदयका एकमें बाले, मिला दो
तुम मधुर वीणा बनो मुझको बना दो ढोल, दुलहिन

३-१-४०]

मोटा पति

आली प्रियतम बहुत मोहाने

चिन्ता क्या न तनिक भी उनको
बेकारीके [illegible] युगमें
इतना हृष्ट पुष्ट मानव
देखा न कभी कलियुगमें

जी होता है उन्हें भेज दूं हवालात मे थाने

दूध बंद है चाय बंद है
और बंद है पूरी
इतने पर भी हुई अँगुठी
उनको मेरी चूरी

अनुशासन हीनता सरिस वह बढ़ते बे पैमाने

गाँधी दुबले गौतम दुबले
दुबले विश्वामित्र,
यह मोटे हैं अधिक भीमसे
लीला बहुत विचित्र

खा खा कर क्या होते इतने अगर हुए बे दाने

कहती हूं बाहर मत जाओ
मेरी उड़ती खिल्ली
कृषि विभाग वाले देखेंगे,
लें जायँगे दिल्ली

ले जाते हैं साँड़ वहाँपर पकड़ पकड़ मन माने

१७-१-४०]

जीवनकी व्यथा

जीवनमें किसने बिष घोला

कितना रसमय मेरा जीवन जैसे हिन्दी भाषा
मुदित मनोहर लिए हुए था नयी नयी नित आशा
जीवनका अभिशाप लिये तुम कौन कहाँसे आये
जैसे पश्चिम वाले आ जाते हैं बिना बुलाये
खेतीपर कैसा यह ओला

नन्हासा यह हृदय हमारा सुख सागरमें डूबा
जैसे चरखेमें गाँधीके हियका था मनसूबा
मैं तुम पर बलिदान, मगर तुम घरे मान हो अपना
है बसंत ऋतुमें अच्छा क्या जेठ माससा तपना
क्या मुझपर ही बमका गोला

एकाकी जीवन है आँखोंमें नित आँसू आता
जैसे वर्षा ऋतुमें होता बे कपड़ेका छाता
रुपये लेकर लौटाना तो लोग भूल जाते हैं
किन्तु तुम्हारे चित्र सामने बार-बार आते हैं
क्या मैं ही हूँ जगमें भोला

२४-९-४०]

एक ग्रामीण बालाके प्रति

जब जगतको भूलता हूँ याद आती हो प्रिये तुम

दो फुटा घूँघट तुम्हारा
और उलझा लट तुम्हारा
झाँक, छिपना झट तुम्हारा
और कहना-'हट' तुम्हारा

मैं न्योछावर प्रात जब कल्याण गाती हो प्रिये तुम

कानमें पत्थर जड़े हैं
हाथमें मोटे कड़े हैं
पाँवमें सोलह छड़े हैं
दिल जहाँ सबके अड़े हैं

पाँवकी झनकारमें उन्माद लाती हो प्रिये तुम

चालमें गजगामिनी हो
तुम हृदयकी स्वामीनी हो
बोलती यों कामिनी हो
लाटकी ज्यों भामिनी हो

देखकर हमको न क्यों घूँघट उठाती हो प्रिये तुम ?

७-२-४०]

मनुहार

प्रिये न तुम कब तक आओगी

साड़ी भेजी, जंपर भेजा
भेजी एक अँगूठी
फिर भी पत्थरकी देवी सी तुम
मुझसे हो रूठी
इस बसन्तकी मादक ऋतुमें कबतक मुझसे मनवाओगी

आजाओ जीवनको मेरे
रसमय तनिक बनाओ
प्रेमरागकी मधुर बाँसुरी
मुझको प्रिये सुनाओ।
वही करेगा घर भर वाले, जिसको भी तुम फरमाओगी।

खुला हुआ है हृदय हमारा
आओ इसमें बैठो
हरिजनके समान बेखटके
इस मंदिरमें बैठो
सिरपर तुम्हें उठायेंगे सब एक बार जब आ जाओगी।

रसके बूंदोंकी आवश्यकता है
उरके काननको
आकर तनिक हरा कर दो
इस सूखेसे उपवनको
हृदय आमसा बौराएगा प्रेम सुधा जब बरसाओगी।

१२-२-४०]

दोपहर

दोपहरकी बिकट बेला—

धूप गहरी पड़ रही थी,
आग नभसे झड़ रही थी;
टेंपरेचर बिरहिणीका
या कहीं पर बढ़ गया था
मैं पहन कर एक गमछा था पड़ा लेटा अकेला

खट खटाया द्वार किसने
पियनने या किसी मिसने
या नया विद्यार्थी है
या कि भिक्षुक स्वार्थी है
या चला नवजात कवि लेकर करैक्शनका झमेला

एक बाला थी, परी थी
धूपमें जैसे तरी थी
दयानिधि, यह 'नून' कैसा ?
'नून' में यह 'मून' कैसा ?
हूरको अल्ला मियाँने आज धरती पर ढकेला

रंग था पक्का करौंदा।
आँख थी जामुन फरेंदा,
रस भरा वह गोल मुखड़ा,
लखनऊका था सफेदा।
देखते ही हृदय पर मारा किसीने एक ढेला।

हृदय तृष्णा मैं बुझाऊँ
और उसे भीतर बुलाऊँ
पर हृदय भी काँपता है
क्या पड़ोसी झाँकता है,
जायगा मेरे हृदयमें आज रस या विष उड़ेला

देखकर कोमल अदासे
और थोड़ा मुसकराके
कर हमारी ओर फैला,
कहा उसने शब्द ऐसा—
एक बहुरुपिया खड़ा हूँ धूपमें, कुछ इनाम दे-ला

[१६-१-४०]

बसंत

मधुमास मधुर आया है
उनकी स्मृति भी है आयी,
ज्यों आगके निकट आते
जलती है दिया सलाई

किंशुक कलियाँ फूली हैं
फूली है सरसों माला
फूली हैं मुझसे वह भी
कैसा बसंतमें डाला

तेरी सुषमा फैली है
माधवी लतासी छलिया
बिख्यात बुद्धिमानीमें
भारतमें जैसे बलिया।

मानसके सूखे तट पर
कोयल कूकी मस्तानी
ज्यों माघ मासमें सिर पर
पड़ गया बरफका पानी

गुंजार कर रहे उपवन—
के बीच मधुप मदमाते
जैसे चुनावमें वोटों के—
लिये लोग चिल्लाते

सौरभसे लदा समीरण
चलता है धीरे धीरे
जिस तरह चवन्नी मलती
मुशकिलसे है चलती रे

मधुभार लिये मंजरियाँ
पेड़ोंपर झूल रही हैं
वह उपन्यास लिखनेमें
मुझको ही भूल रही हैं

क्या व्यर्थ चली जाएँगी
मेरी बसंतकी रातें
जिस भाँति लड़ाकू देशोंके-
बीच शान्तिकी बातें

लाया बसंत मादकता
देखो रसाल बौराया
मैं भी न कहीं बौराऊँ
मधुमास न मुझको भाया।

१-२-४०]

आँखें

यों तुम मेरी ओर न देखो
आँखें, बाले, नहीं मीन हैं,
सन्मुख खंजन, कंज, हीन हैं
नही नैन, यह गन-मशीन हैं
मेरी बेबस हृदय-नावको
बड़ी भयंकर सब मरीन हैं
इनकी तिरछी कोर न देखो।
मीठी लंगड़े आम सरिस हैं
मतवाली यह जाम सरिस हैं
भक्तोंके हित राम सरिस हैं
मेरे सम्मुख शोख बहुत हैं
मुझको यह इसलाम सरिस हैं
है कितनी मुँह जोर न देखो।

[२१-१-४०]

नया जीवन

अब भी क्या न प्रिये आओगी
बरतन ताँबेके पीतलके बेच दिए हैं मैंने
कमरे चीनीके प्लेटोंसे सजा लिए हैं मैंने
रचनाएँ हिन्दीकी गुदड़ीमें बेची हैं सारी
अँग्रेजी रचनाओंसे हैं सजी हुई अलमारी
इसमें तो तुम सुख पाओगी......

चटनी और अंचार मुरब्बोंको फेंकवा डाला है
जैम, चीज़, सासोंसे वाले, सजा हुआ आला है
चौके चुल्हेका घरमें कुछ नहीं निशान बचा है
देखोगी डाइनिंग टेबुल तुम घरमें खूब रचा है
घरको तुम होटल पाओगी......

भगिनी, भाई, घर वालोंको सबको धता बताया
किसी मित्र या संबंधीकी नहीं पड़ेगी छाया
अब क्या बाले कमी रह गयी रुचिमें शीघ्र बताओ
वह भी पूरा करदूं जल्दी लेकिन तुम तो आओ
सेवामें मुझको पाओगी......

चाय सबेरे, लंच दोपहर, डिनर रातमें, खाना
संध्याको सिनेमा देखें, फिर सुने रेडियो गाना
ढाल ढालकर मुझे पिलाना बन जाना तुम साकी
स्वर्ग यहीं पर तुम पाओगी।

२८-२-४०]

प्रेमियोंकी सूचीमें

कुछ तो विधि बतलाओ बाले
क्या मैं करूँ बताओ मुझको
जिससे तुम मिल जाओ बाले—
गेहूँ मँहगा चावल मँहगा
भाव बढ़ा है घीका
ऐसे समय हाल मत पूछो
तुम कुछ मेरे जीका
इस मँहगीमें तुम भी अपना
मूल्य न अधिक बढ़ाओ बाले
मिलन तुम्हारा कठिन,
सरल है कमल विश्वपर खिलना
सरकारी सरविस समान है
क्या तुमसे भी मिलना
सूचीमें निज प्रेमिक लोगोंके
मुझको भी लाओ बाले—

६-३-४०]

मिलनकी कठिनाई

उनको कभी मना पाऊँगा

जिनके हित मूँछे मुँड़वाई
जिनके हित बाँधी नेकटाई
जिनके कठिन प्रणयने मुझसे
अंग्रेजी स्पेलिग रटाई
पीड़ा अपने व्यथित हृदयकी उन तक कैसे पहुंचाऊँगा

अग्रगामिनी हो तुम बाले
खड़ा पुराना मैं चरखा ले
तुम गाली भी दो मुझको, पर
निकलूँगा मै नहीं निकाले
तनिक सैन नैनोंका करदो सेवामें मैं मिट जाऊँगा

आँखें बिल्कुल ठरासी है
बातें प्रिये तबरासी है
कैसे मिलूँ प्रेमकी नगरी
तो खैबरके दर्रासी हैं
तुम मिल जाओ मुझे अगर गरमीमें मै मलार गाऊँगा

४-४-४०]

मेरा हृदय

मेरा हृदय समझ पाओगी
नव गुलाबसा यह कोमल है
कवि-शरीरसा यह दुर्बल है
राजनीतिसा यह टलमल है
प्रणय ग्रंथके पूत पाठका
यह अनुबाद प्रिये अबिकल है
समझोगी जब अपना इसके निकट हृदय हीरक लाओगी

स्नेह बिना ही यह है जलता
उष्ण उसांसोंसे है गलता
चोटोंसे ही यह है पलता
प्रेम पंथ जो कंटकमय है
उसमें यह है सदा टहलता
जगसे बिमुख प्रणयके मगमें, कहीं इसे भी तुम पाओगी

प्रेम पूर्ण यह बहुत सरस है
रसगुल्लोंसा इसमें रस है
प्रेमी मनका यह सरबस है
प्रेम भार ढोनेको समझो
इसे एक बढ़िया सा बस है
हम अनन्तकी ओर चलेंगे तुम्हें बिठाकर जब आओगी

२०-४-४०]

विधाता

बोलो क्या अपराध हमारा

प्रेम पाठ तुमने सिखलाया
फिर तुमने मुझको ठुकराया
इंटरव्यू होनेपर भी मानो
सरविसमें नाम न आया,
थर्ड डिवीजन वालोंसा मैं भी हूँ बहुत निरीह बिचारा

तुम चाहे हिटलर बन जाओ
मुझसे लड़नेको तुम आओ
चेंबरलेन सरिस सीधा तुम
मुझे देख कुछ तो शरमाओ
मैं क्या हूँ—अब झूम रहा है तेरे चरणोंपर जग सारा

मुझसे क्यों लड़ती है बाले,
जल्दी एक समिति बैठाले
उसका निर्णय मान प्रेमसे
आ मिल जायें बैठे ठाले
या हम-तुम 'हेड-टेल' करें फिर देखें किसने जीता हारा।

७-५-४०-]

कवियोंका बसंत

कवियोंका कैसा हो बसंत ।
कवि कवयित्री कहतीं पुकार ।।
कवि सम्मेलनका मिला तार ।
शेविंग करते, करती सिंगार ।।
देखो कैसी होती उड़ंत ।
कवियोंका कैसा हो बसंत ।।

छायावादी नीरव गाये ।
ब्रजबाला हो, मुग्धा लाये ।।
कविता कानन फिर खिल जाये ।
फिर कौन साधु, फिर कौन संत ।।
करदो रंगसे सबको गीला ।
केसर मल मुख करदो पीला ।।
कर सके न कोई कुछ हीला ।
डूबो सुख सागरमें अनंत ।
कवियोंका ऐसा हो बसंत ।।

२१-१-४०]

(सुभद्राकुमारी चौहानकी एक रचनाकी पैरोडी है)

दुर्बलताका कारण

तुम पूछ रहे हो मुझसे क्यों क्षीण हुआ जाता हूँ।
है मिली आज्ञा उनको।
कांग्रेसके मंत्री वरसे ॥
तुम नित्य सूत दस तोले
कातो निज कोमल करसे ॥
वह प्रात चलाती तकली जलपान नहीं पाता हूँ। यों—
चूल्हेके सम्मुख आना
उनको है तनिक न भाता ॥
थोड़ी सी आँच लगी तो
चेहरा काला पड़ जाता ॥
वेतन थोड़ा है मेरा इस लिये न कुक लाता हूँ। यों—
संध्याको चंचल सखियाँ
ले जाती उन्हें बुलाकर ॥
उस समय बताओ कैसे
रह सकती हैं वह घर पर ॥
इसलिये दोपहरको मैं बस एक बार खाता हूँ। यों—

जो दूध रातमें मिलता है
वह भी है लासानी ॥
है दूध पावभर उसमें
है तीन पावभर पानी ॥

उनके भयसे अहिरिनसे कुछ कहते शरमाता हूँ । यों—

निशिमें रोता है बच्चा,
वह उपन्यास पढ़ती हैं ॥
या पेंसिल कागज़ लेकर ।
छन्दोंके तुक गढ़ती हैं ॥

मैं जाग जागकर बैठा बच्चेको बहलाता हूँ । यों—

अवकाश मिला जब उनको ।
तब लगीं रेडियो सुनने ॥
या लंबी सूई लेकर ।
लगती हैं जंपर बुनने ॥

मैं ऊन और बिजलीके बिल लेकर पहुँचाता हूँ । यों—

२०-५-४०]

मच्छर

युद्धके तुम वायुयानोंके सरिस हो भनभनाते।
और नेताओं सरिस उत्साहसे भाषण सुनाते॥
छतरियोंसे जिस तरह है वायुसे सेना उतरती।
इस निरीह शरीरपर तुम उस तरह हो उतर आते।
नयनके भी तीरसे चोखा तुम्हारा डंक, साथी॥
कर दिया निष्क्रिय मुझे हो फेल जैसे बंक, साथी॥
ले गये होंगे विदेशी स्वर्ण भारतसे न इतना॥
चूसकर हैं कर दिया मुझको रुधिरका रंक साथी।
वीर हो तुम, वारके पहले सदा ललकारते हो।
लघु महान तथापि, तुम भयसे न हिम्मत हारते हो॥
तुम नहीं छिपकर कभी हो आक्रमण करते किसीपर।
कायरोंकी भाँति पीछेसे न छूरा मारते हो॥
मर रहे रोगी बहुतसे बस तुम्हारी ही कृपासे।
जी रहे हैं डाक्टर कितने तुम्हारी ही दयासे॥
युक्तियाँ कुछ भी करूँ तुमपर प्रभाव नहीं पड़ेगा।
भय अगर तुम मानते हो तो तनिक सी बस हवासे॥
कौन कहता है तुम्हें मच्छर, महा कवि हो सयाने।
भेद यह, तुम आ गये रुपये बिना कविता सुनाने॥
और यह है भेद कवि को है बहुत पड़ता मनाना।
तुम बिना कुछ भी कहे लगते सदा हो गुनगुनाने॥

२२-५-४०]

कुन्तल

यह कुन्तल कैसे काले हैं......

गौरी शंकरकी चोटीपर।

घन-शावक चरते बिखर-बिखर॥

या अबीसिनियन सैनिक लंदनमें फिरते मतवाले हैं।

अलकें हैं कितनी बंक सखे।

जिस भाँति फारसी अंक सखे॥

यह ऐसे अक्षरसे बेढब जो समझ न आनेवाले हैं।

मेरे कर्मोंका लेखा है।

या यह शिकस्तकी रेखा है॥

मेरी आँखोंने जिन्हें देखकर कितने अर्थ निकाले हैं।

काले सागरकी लहरें हैं।

या किसी ग़ज़लकी बहरें हैं॥

काजलकी सरिताएँ असंख्य चलती यह ऊँचे खाले हैं।

शंकरकी ग्रीवा कंबु वेश।

विषकी रेखायें हैं विशेष॥

पावसकी मावसकी रजनीमें फैले विषधर काले हैं।

चाबुकसे उठ-उठ आते हैं।

कोमल कपोल पर आते हैं॥

है चोट वहाँ लगती, क्यों मेरे उरपर पड़ते छाले हैं।

२-१०-४०]

पथ न भूल जाना

पथ भूल न जाना पथिक कहीं
संध्याको पश्चिममें लाली।
श्यामता लिये जब आयेगी॥
फूलोंका हार लिए मालिन।
गजरा-गजरा चिल्लायेगी॥
उन दोनोंकी सुषमा लखकर।
पथ भूल न जाना पथिक कहीं॥
जिस समय बिहंगम बालाएँ
संगीतोंके मृदु स्वर भरती॥
जिस समय किरण स्वर्णिम सुखकर
पुष्पोंका मुख रंजित करती॥
सुस्मित गुलाबको देख-देख
पथ भूल न जाना पथिक कहीं॥
जब ढीला पाजामा छोड़े
था चुन्नटदार पहन धोती॥

घरसे निकलो चमकाकर मुख
जैसे कलचरके हों मोती ।।
निज शृंगारोंकी सुषमामें
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।।

खानेको पान तमोलीकी
दूकानके निकट जाओगे ।।
कर अधर लाल, खाकर जर्दा
मुखसे सुगन्ध बगराओगे ।।
दर्पणमें निज प्रतिबिम्ब देख
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।।

पथपर बैठे होंगे चाटों......
को लेकर खोंचेवाले भी ।।
गुलगप्पे-दही बड़े आलू,
होंगे सब पर मसाले भी ।।
मुखमें पानी यदि भर आये
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।।

सिनेमा घरपर जब टिकटके......
लिये उत्सुक भीड़ बड़ी होगी ।।
उत्कंठामें महिलाओंकी भी
अलग जमात खड़ी होगी ।
तब पिया मिलनके गानेमें ।
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ।।

कवि सम्मेलनमें कविता सुन
जब लोग वाह करते होंगे ॥
हस्ताक्षर लेनेको जब कोमल
कर-पल्लव बढ़ते होंगे ॥
आटोग्राफोंके लिखनेमें
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ॥

स्टेशन पर नत नयन किए
महिलाएँ अगर बिदाई दें ॥
डब्बोंके वातायनसे जब।
चन्द्रानन तुम्हे दिखाई दें ॥
तब इधर-उधर की उलझन में
पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

चंचल गति आती जाती हो
जब कोई अंग्रेजी बाला।
अधरोंको लाल रंगे, पाउडर
मुख पर, नयनोंमें हो हाला ॥
ऊँचे 'स्कर्ट' निरख करके
पथ भूल न जाना पथिक कहीं ॥

२९-१२-४०]

[यह कविता डा० शिवमंगलसिंह सुमनकी कविता "पथ भूल न जाना पथिक कहीं' की पैरोडी है]

कविके भावोंकी रानी

मैं कविके भावोंकी रानी।
मेरे पायलकी छूम छनन
कर देती कविका मन उन्मन
जब आती मैं सम्मुख बनठन
कविके मुखको मिलती वाणी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥
रससे भर देती हूँ आनन,
जैसे कानोंमें खूँट सघन
जब ले हाँथोंमें दलबेसन
आती चौकेसे दीवानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥
जब मैं उनके सम्मुख आकर।
हूँ डाँट बताती गर्जन कर॥
वह लिख लेते कुछ कागज पर।
जगतीने वह कविता मानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

कविके दिलकी मै हूँ सरजन
शासन करती जैसे करजन
बच्चे मेरे आधे दरजन
जिनकी वह करते निगरानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

पूरा होता न वजट मेरा
तब सहलाते वह लट मेरा
कहना करते झटपट मेरा
देते न मगर कौड़ी कानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

वह बैठे-बैठे रजनी भर
भन भन करते जैसे मच्छर
सुन सुनकर कानोंमें जो स्वर
निद्राकी मर जाती नानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

मैं देख उन्हें होती वस्मित
जब उठते वह प्रातः अलसित
मुखपर ऐसी रंगत चित्रित
जैसे हुक्केका हो पानी।
मैं कविके भावों की रानी॥

मैं गान्धीजीकी आशा हूँ।
काकाजीकी अभिलाषा हूँ॥
मै हिन्दुस्तानी भाषा हूँ।

अभिनव कवि जिसके अभिमानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

कविको लगती हूँ बहुत भली
जैसे बच्चोंको मूँगफली
बंगालीको जैसे मछली

जैसे बरघेको हो सानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

आँखोंकी रायफिल दो नाली।
उनके सम्मुख करके आली॥
करवा देती पाकेट खाली।

जैसे सीमा पर अफगानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

पश्चिममें छायी है लाली।
पशु बनसे फिर आये आली॥
उठ कवि करदे कमरा खाली।

की बहुत अभीतक मनमानी।
मैं कविके भावोंकी रानी॥

१२-१२-४०]

(यह कविता कविवर गुलाबकी कविता—'मैं कविके भावोंकी रानी' की पैरोडी है)

द्वन्द्

जीवनका लेकर नव विचार
जब चला द्वंद मुझमें उनमें,
हो गये बहुत अभिनव प्रचार
मुझपर फेंके जाते निशिदिन,
तरकारी, सिरका, दधि, अचार।
मैं स्वयं सतत उन देवीकी,
मंगल उपासनामें विभोर
पर जब वह लोढ़ा ले उठती,
मिलती न मुझे फिर शरण और।
उनकी उच्छ्वलित शक्ति बेढब;
उनका दुलार वैचित्र्य भरा।
गामाकी बड़ी बहन जैसे,
मुझको देती हैं सदा हरा।
जब बाहु पाशमें कस लेती,
बंध जाता मेरा वार-पार।
जैसे खटियामें हो निवार॥

११-३-४१]

(यह कविता कामायनीके गीत—'जीवनका लेकर नवविचार' की पैरोडी है)

कौन यह तूफान रोके

जोरसे सीटी बजायी, फिर हरी झंडी दिखाई।
बैठ भी पायी न थी वह, गार्डने गाड़ी भगाई॥

रह गया मुँह ताकता मैं, हृदयके अरमान रोके,

हाथ भी न मिला सका मैं, पान भी न खिला सका मैं।
आ रही थीं प्रेमकी लस्सी उन्हें न पिला सका मैं॥

चल पड़ी तूफान गाड़ी, मैं खड़ा था प्रान रोके,

हाथमें चप्पल उठाकर, पाँव जल्दीसे बढ़ाकर।
दौड़कर चाहा कि हो लूँ ट्रेनके मैं भी बराबर॥

देखता हूँ है मुझे कानिस्टेबल बलवान रोके,

मैं अहिन्सा हूं बरतता, नहीं तो इनसे समझता।
गार्डकी भी ड्राईबरकी, भी मरम्मत खूब करता॥

हाथमें लेकर खड़ा हूँ आज पादत्रान रोके,

खींच लो जंजीर कोई, हरो दिलकी पीर कोई।
रेलपर लेटो, चलै अंजन नहीं, है वीर कोई॥

रुक नहीं सकती किसीसे, ट्रेन यह बे-जान रोके,

प्लेटफारम है भरासा, मैं खड़ा हूँ अधमरा सा।
रोक दे गाड़ी नहीं क्या, बल किसीमें है जरा-सा॥

देशका उत्थान है जिस भाँति पाकिस्तान रोके,

जानता यह हाल होगा, गार्ड मेरा काल होगा।
यह बिदाईका समय मेरे लिये जंजाल होगा॥

हो खड़ा जाता कुलीको मैं पकड़ सामान रोके,

रुक न पायी रेल गाड़ी, मैं खड़ा जैसे कबाड़ी।
डर मुझे है फेल हो जाये कहीं मेरी न नाड़ी॥

रोक दे गाड़ी अगर तुझसे रुके भगवान रोके,

गंगा दशहरा १९४१]

(यह कविता डा० बच्चन के 'कौन यह तूफान रोके' की पैरोडी है)

छुट्टीका दिन

मूढ़ छुट्टीका दिन है आज
छुट्टीके दिन भी पढ़ता है तनिक न तुझको लाज।

तू पुस्तक लेकर है पढ़ता।
मुझको गपमें है सुख मिलता॥

जैसे सुख मिलता है जब हम खुजलाते हैं खाज।

कैसा तू है छात्र अनोखा।
छात्र नहीं तू बिल्कुल घोंघा॥

छुट्टीमें पढ़नेका कालेजमें है नहीं रवाज।

पुस्तक फेंक ताश ले करमें।
पशुसा क्या बैठा है घरमें॥

तुझको ही पढ़नेवालोंका बनना है सिरताज?

हो जाये मजकी कुछ बाजी।
फिर हो जाय तबीयत ताजी॥

चलें मैटिनीमें सिनेमामें गायेंगी पुखराज।

है बन रहा स्पेशल भोजन।
खीर, पुरियाँ, हलुआ-सोहन ॥

डट कर खाँय आज खाना, तब समझेगा महराज।

ग्रामोफ़ोन कहींसे लायें।
सहगलके कुछ गीत बजायें ॥

या तुम गाओ चलती ठुमरी मैं रेतूँ इसराज।

खेल कूदसे कभी न भागो।
जागो अगर इसी हित जागो ॥

जैसे खंडनमें जाग्रत रहता है आर्य समाज।

७-८-४१]

तोंद

नाविक हम भी पार चलेंगे
बिजन बालुका तटपर चलकर
टहल-टहलकर मचल-मचलकर
स्वास्थ सुधार करेंगे अपना
फिर तो दुबले होकर हम भी प्रियतमका मनुहार करेंगे

रुक रुककर मगमें चलता हूँ
उठकर भाग न मैं सकता हूँ
यौंही रहा विकसता मैं तो
मानव तो क्या, मुझे देखकर यमके पहरेदार डरेंगे
तोंद हमारी निशि-दिन बढ़ती
आँखोंमें उनकी है गड़ती
सांचीका स्तूप बना है
लोट-लोट कर रैती में हम, इसका गुरुतर भार हरेंगे
भोजन छोड़ दिया है मैंने
क्रूशन साल्ट लिया है मैंने

घटा न ब्यास इंच भर मेरा
क्षीण करेंगे काया हम या डूब वहीं मंझधार मरेंगे

कोई उनपर जान दे रहा
कोई है इमान दे रहा
जीवनकी एकत्र की हुई
यही मोटाई उनको अर्पित कर, भव पारावार तरेंगे

जिस दिन क्षीण हुआ तन मेरा
होगा झट विज्ञापन मेरा
सिनेमाके स्टारों सा तब
मेरा चित्र छापकर अपना कालम सब अखबार भरेंगे

१६–८–४१]

प्रणयका भिखारी

प्रेममें प्रियतम क्षेम नहीं
कितने भेजे पत्र डाकखाने वाले घबड़ाये
बीत गये दो हफ्ते मुझको रोटी मक्खन खाये
तुमने पूछा अबतक मुझसे मेरा क्षेम नहीं

आता स्वयं तुम्हारे घर, पर पिता तुम्हारे रहते
डर है मार न दें गोली, हम लाठी तक सह सकते
तुम आओ मेरे घर कोई देगा 'ब्लेम' नहीं

कैसे लिखूँ, लिखूँ क्या प्रियतम, शक्ति बहुत ही कम है
मानो टी०बी० का मरीज अब तोड़ रहा निज दम है
आ जाती क्यों नहीं प्रिये, हो तुम तो 'लेम' नहीं

तुम हो मुझमें, मैं हूँ तुममें केवल कहनेसे क्या
मैं हूँ यहाँ, वहाँपर तुम हो यह दुख सहनेसे क्या
हृदय हमारा फोटो है तो तुम क्या 'फ्रेम' नहीं

पत्र भेजता चुपके-चुपके दरवाजे तक जाता,
सब सोते जब, नाम तुम्हारा लेकर तब चिल्लाता
घबराती क्यों मुझसे जैसे गैय्या 'टेम' नहीं

जीवन एकाकी, नीरस है, स्नेह सुधा बरसाओ
हृदय हमारा चाय बने तुम चीनीसी घुल जाओ
एक ओरसे खेला जाये यह वह गेम नहीं

प्रणय सूत्रका आओ हम तुम मिलकर चर्खा कातें
चिट्ठी पत्री और कोर्टशिप हैं विलायती बातें
मैं हूँ साहब नहीं और हो तुम भी मेम नहीं

मूँछ विहीन, डिंगरियाँ कितनी, कविता मैं करता हूँ
बाहर कभी-कभी खद्दर भी पहन लिया करता हूँ
होगा और किसीका मुझसे बढ़कर 'क्लेम' नहीं

३०-९-४१]

हवाई हमला

यदि हमला हुआ हवाई
कहाँ छिपूँगा बात समझमें नहीं अभीतक आयी
प्रेमीका उर है मेरा घर,
जीर्ण, शीर्ण और जर्जर
बाबाके विवाहमें निर्मित
हुआ, वही है छप्पर
सौरभसा उड़ जाय, तनिक यदि हवा चले पुरवाई
चक्कर आता है सिरमें
यदि कहीं देखलूँ खांई
झूठ नाम बमका सुनते
आजाती मुझको झांई
बड़े लाट! क्या करूँ आपकी बारम्बार दोहाई
अति सुन्दर यह नियम बना
जब भोंपू बोले स्वरमें
बिना रोकके घुस जाओ
जब चाहो जिसके घरमें
इसी बहाने होगी अब तो मेरी वहाँ रसाई

२४–५–४२]

मेरा जीवन

जीवन व्यतीत यों करता हूँ
कोई असीमको खोज रहा
कोई ससीमको खोज रहा
कोई नसीमका चित्र लिए रोता ही रोता रोज रहा
मैं अपने मनकी व्यथा इन्हींको देख-देख कर हरता हूँ
कोई है बना असहयोगी
कोई अवधूत बना योगी
कोई वियोगमें रोता है, कोई हँसता है संयोगी,
मैं रोटीकी नौकापर इस जीवनके पार उतरता हूँ
है दास गवर्नरका कोई
है दास कलक्टरका कोई
अपने अफसरके दास कई, सालोंके जैसे बहनोई
मैं उस जगमें यम, इस जगमें खुफिया पुलिससे डरता हूँ
कुछ नैनोंकी हाला पीते
कुछ मरते हैं रहते जीते
कुछ फाड़ फाड़कर हृदय सदा नैनोंके डोरोंसे सीते
मैं तो लड़कोंकी कापीके बंडलपर दिनभर मरता हूँ

२-५-४२]

विवशता

करो मत मुझको एकाकी
चली जाओगी मुझे छोड़
क्या रह जाएगा बाकी

जितनी बिनती की तुमसे यदि
नेहरूजीसे यदि करता
कैबिनेटका मैं बन सदस्य फिर
दिल्ली बीच बिचरता
लोग हमारा भाषण सुनते
जैसे सुनते टाकी

रहो कुछ दिनों घर बन जाये
मेरा इन्द्रपुरी, वर
हम बनवा देंगे तुमको लन्दन
में हाई. कमीश्नर
दो दिन तो बन जाओ मेरी
प्यारी मेरी साकी

बिजली

तुम्हें देखकर ही चलता है
तेजीसे यह घोड़ा
हृदय हमारा घोड़ा है तो
तुम इसकी हो कोड़ा
तुम्हें देखकर ही जीता हूँ
कसम तुम्हारी माँकी

४-२-४१]

टोना

उनकी आँखोंमें टोना है—
मेरी आँखोंमें पानी है
बीतीसी एक कहानी है
उनकी आँखोंके बशमें जगतीका सब कोना-कोना है
उनके दासोंका दास हुआ
फिर भी न हृदयके पास हुआ
उनसे आशा करना कुछभी ऊसरमें सरसिज बोना है
सब लोग उन्हींकी कहते हैं
हम एक अकेले रहते हैं
हम जो निर्माण करैं मिट्टी, बह जो छूदें वह सोना है
दे दिया उन्हें सब कुछ अपना
उनसे कुछ पाना है सपना
इसपर भी उनपर मिटते जाते हैं इसका ही रोना है
जो कुछ है वह ले लेते हैं
इतना मुझसे कह देते हैं
खाली है तो क्या मेरा ही जूठा तो यह भी दोना है

१६-१२-४१]

कुली होते

कुली हम न हुए—

भाग्य जग जाता कुली होते अगर हम आज
आज हवड़ा जंकशनपर है हमारा राज
लखपती कितने खड़े रहते बने भकुए

नष्ट जीवन हो गया आधा किताबों बीच
बाल-बच्चे बाल मस्तकके रहे हैं खींच
नोकरीके द्वार चरणोंने अभी न छुए

आज कल अनुवाद करता हूँ छ पैसे पेज
दूसरोंके लेख हरनेमें बहुत हूँ तेज
मगर इसमें भी बहुतसे बढ़ गए ठलुए

कुली हम न हुए—

.१-१२-४१]

आवाह्न

जल्दीसे प्रियतम आओ
मुझको बहुत जलाते हो, अब चूल्हा तनिक जलाओ

तेल नहीं मिट्टीका मिलता
मँहगी हुई सलाई
आग नहीं जलती चुल्हेमें
आती मुझे रुलाई
धधक न जाएगी लकड़ी क्या, यदि सम्मुख आजाओ
हृदय हमारा लेकर तुम
बन गये निठुर क्यों ऐसे
लेख लिखा कर संपादक
जिस भाँति न देते पैसे
वादों ही वादोंसे बच्चोंसा न मुझे बहलाओ
अब तो आना और कठिन है
ब्लैक आउटकी बेला
जिधर जाओगे तुम प्रकाशमय
होगा तुरत उजेला
एयरोप्लेन बनो प्रियतम 'मेरे घरपर मंडराओ'

२-१-४२]

[दूसरे यूरोपीय महायुद्धके समय लिखा गया था]

सरविस

सरविसके हित जग दीवाना

बिना घूस लेने वाली है
पुलिस सरल पा जाना
पर दुर्लभ है भारतमें
इस समय नौकरी पाना

सरविसके हित पढ़ना है
सरविसके लिए पढ़ाना
सरविसके ही लिए सीखते
लोग नाच औ गाना

कितनोंको गिरजा घरमें
पड़ता है शीश झुकाना
सरविस पानेको कितने ही
बन जाते मौलाना

कितने पुरुष नारियोंका
धारण करते हैं बाना

महिलाएँ बन जाँय मर्द
इसका हो अगर ठिकाना

ले अवतार सरल है जगमें
परमेश्वरका आना
पर उनको भी सरविसके हित
होगा कष्ट उठाना

१६-१-४२

भोजन हिताय

अर्पित है मेरा मनुज काय
भोजन हिताय, भोजन हिताय

व्रतका मैंने कर बायकाट
पूरी हलवेसे उदर पाट
देखा भोजनमें ही विराट

जितने जगमें हैं सम्प्रदाय
भोजन हिताय, भोजन हिताय

रसगुल्ला हो या रहे साग
मुझको न किसीसे है विराग
भोजन बनको मैं हूं दवाग

जाताहो जीवन जाय–जाय
भोजन हिताय, भोजन हिताय

हे जन भोजनसे मुँह न मोड़
मिल सके जहाँ, जितना, न छोड़
खानेमें बन जा बिना जोड़

जीवनमें जितने कर उपाय
भोजन हिताय, भोजन हिताय

२८–१–४२]

[कविवर मैथिलीशरण गुप्तकी रचना 'बहुजन हिताय'की पैरोडी]

जीवनदान

तुम चाहो तो जीवित कर दो

मिलता नहीं सोमरस
वैदिक ऋषियोंने पी डाला।
पानेको अमरत्व, सुधाको
सुर-मंडलने ढाला
शेष रहा जो, उसे छिपाये रहते प्रिये, अधर दो

सुधा स्वप्न है, बे पैसे
हालाको किसने पाया ?
सस्ती थी नीरा उसको
नेताओंने अपनाया
इतना करो हाथसे अपने चाय एक कप भर दो

आधेसे कुछ अधिक दूध हो
थोड़ी चाय मिलाना
एक घूँट उस प्यालेमेंसे
प्रियतम तुम पी जाना
सुधा और शक्कर दोनों अधरोंसे इसमें भर दो

८-३-४२]

जीवन

क्यों कहते हो इस जीवनका बहुत कठिन है कटना
सुख दुख दोनों इसके साथी
जीवन है दोनोंका संगम
सोन और गंगापर जैसे बसा हुआ है पटना

चलो भूल दुख, जीवन-पथ पर
जैसे छात्र भूल जाते हैं
पाठ्य पुस्तकोंके पृष्ठोंका छुट्टी बीच उलटना

जीवनकी हैं कठिन कहानी;
किन्तु नहीं इससे कठोर क्या
रात-रात इतिहास और भूगोल विषयका रटना

प्रेम करो सबसे जीवनमें;
लड़नेमें अशान्ति है, दुख है,
जैसे आँखोंके लड़नेसे हो जाती दुर्घटना

जिसका हृदय प्रेमसे रीता
जग-जीवन उसको है जैसे
राह बड़ी, दोपहर घोर, बाईसिकिल ट्यूबका फटना

१-४-४१]

निराशा

आज मिला वरदान
युग युगके संचित पूरे हो गये आज अरमान

बैठ गलीमें उनकी निशि दिन
नाम उन्हींका जपना
जीवनमें मैंने समझा था
यही काम है अपना
आज उन्होंने कहलाया भागो लेकर सामान

कभी कहा था आयेगा दिन
होगी पूरी आशा
कैसी मधुर लगी थी
मेरे कानोंको वह भाषा
बड़ी पीन कल्पना हुई ज्यों विशेषांक कल्याण

इस नन्हेंसे जीवनसे
इस भाँति खेल मत खेलो
हृदय लिया, धन लिया, बुद्धि ली,
यह जीवन भी ले लो
ले लेते हैं सूद जिस तरह काबुलके अफ़गान

२१-५-४२]

संडे

आज है प्रियतम संडे
नोकरसे भुनवा दो मेरे लिए चार तुम अंडे

हे लावण्यमयी अपना मुख
निकट न मेरे लाना
वर्जित आज नमक है प्रियतम
किसी रूपमें खाना
यही शास्त्र कहता है, कहते यही धर्मके पंडे

आठ बजे झन्डा अभिवादन—
में तुमको जाना है
बावन कापी हमें करेक्शन
करके भुगताना है
अभी चली जाओ, संध्याको आना ठंडे-ठंडे

सात दिनोंमें एक दिवस
मैंने विश्राम न पाया
भोजन बढ़िया होता जिस दिन

मनका खब्त समाया
देखें फिर भी लगते हैं या नहीं कालके डंडे

छीना नगर कांग्रेसने तुमको
मुझसे है प्रियतम !
छीन लिया कालेजने सब
अवकाश, नाकमें है दम
जीवनमें विश्राम मिला है मुझको कभी न बन डंडे

६-६-४२]

विवशता

क्या मैं करूँ बताओ प्रियतम
प्रतिदिन बढ़ती है कठिनाई होती नहीं तनिक कम

पत्र लिखूँ कैसे तुमको अवकाश नहीं है मिलता
जैसे गूलरका दुनियामें फूल नहीं है खिलता
जलकर मेरा हृदय हुआ जाता है अब आलूदम

रेलोंमें है भीड़ बड़ी, है प्लेन जा नहीं सकता
मोटरकी है नहीं राह तब किसका 'बस' है चलता
उतनी दूर जा नहीं सकते बग्घी, एक्के, टमटम

दाम लिफाफेका बढ़कर हो गया प्रिये दो आने
पोस्ट कार्डमें पत्र कभी लिखते हैं नहीं सयाने
सूख गया है इसी सोचमें सब शरीरका बलगम

मेघ किसीने, पवन किसीने दूत बनाया अपना
मच्छर द्वारा भिजवाऊँगा अपना तुम्हें तड़पना
अच्छा तुम्हें लगेगा उनका प्यारा-प्यारा सरगम

८-६-४२]

पसीना

पसीना बहता है अविरल
जैसे भारतमें बढ़ता जाता घी वेजीटेबुल

पड़ा पसीनेमें इतना हूँ तनिक न आता चैन
नैनोंके पानीमें जैसे बिरहीके हों नैन
कलकी भाँति बह रहा जल है औ मैं हूँ बेकल

रोम-रोमसे स्वेद बह रहा निर्झर जैसे कोई
उसके बीच पड़ा हूँ मैं जैसे आटेकी लोई
लोट रहा हूँ जैसे कोई फेंक रहा हो रमल

जटा जूटसे निकला, औ पत्थरसे निकला पानी
चरणोंसे निकला जल जिसकी महिमा बड़ी बखानी
देख रहा हूँ आज बना है जलका स्रोत अनल

गीले नैन, हृदय भी गीला, गीला हुआ शरीर
शरद निशामें जैसे ओसोंसे हो लदा समीर
उनकी स्मृति मत बह जा तू भी होकर आज तरल

२७-७-४२

बरसात

सजनि वर्षकी यह है प्रथम बरसात
सघन घन छाया गगनमें
जिस तरह फैले मुहासे हैं
युवक दलके बदनमें
आज हम तुम कुछ करें मीठी सलोनी बात।

रूठती पहले न थी तुम,
आजकल तो बस बनी—
रहती सदा हो स्वानकी दुम
यद्यपि नित्य लाता हूँ नये सौगात।

अंशुमाली सो गया है
विश्व कुल घुल प्रियतमे
तममें पुलकमय होगया है
इस समय भी तुम रही हो सूत बैठी कात।

खाओ तुम, मुझको खिलाओ
चटपटी ताजी पकौड़ी

आज पालककी बनाओ
हृदय हो आनन्दमय रसना रहे रस स्नात।

सूतसे तुम यों घिरी हो
रूपयोंके बीच ज्यों
गिन्नी किसीने ला धरी हो
क्षीर सागरमें खिले ज्यों स्वर्णका जलजात।

कौनसी जल्दी पड़ी है
अभी तो आरंभ वर्षाकी
हुई रिम झिम झड़ी है
देख लो केवल बजे हैं प्रिये साढ़े सात

अभीसे भोजन बनाना
तुम रहो बैठी न खाएँगे
कहो तो आज खाना
इस समय जाकर करो मुझपर न उल्कापात।

११–७–४२

सलवार

सजनि पहन लो सलवार
तभी तो तुम कर सकोगी बीरतासे वार

बीरतासे और साड़ीसे नहीं कुछ मेल
कहाँ चीनीसे निकल सकता प्रिये है तेल
कायरोंका वेश, साड़ी, दो तुरंत उतार

वीर क्षत्राणी लड़ी लड़कर हुई बलिदान
आज भी जाग्रत उसीसे तरुण राजस्थान
निकर पहने, कर लिए थी भाँजती तलवार

वेश साड़ीका पुराना है नितांत असभ्य
इसीसे कुछ सभ्यता हमको नहीं है लभ्य
पायजामा ही करेगा देशका उद्धार !

पहन लो सलवार, ऊपर ओढ़नी लो ओढ़
पाल लो मुर्गी बनो तब सभ्यतामे पोढ़
देश रक्षाके लिए बस है यही उपचार

३०-७-४२

अमरता

क्यों उन पर भला न मरता

लक्स लगानेमें प्रातः वह लीन रहा करती हैं
सन्ध्याको सिनेमा-गंगामें सदा बहा करती है
चंचलतामें पारा उनके सम्मुख पानी भरता

चाय बिना पीड़ा सिर में है, टोस्ट बिना ज्वर आता
केक पेस्ट्री बिना नहीं भोजन है उनको भाता
वे चम्मच कांटेके खानेको कहतीं बर्बरता

लोटे-लोटे भर लोशनसे कायाको नहलातीं
नित्य नयी साड़ी हर हफ्ते चप्पल नया मँगातीं
जहाँ जहाँ जातीं समीरमें सौरभ बिमल बगरता

जिस दिन यह आयेगी तर जाएगी कितनी पीढ़ी
ऐसी ही पत्नी तो बेढब है उन्नतिकी सीढ़ी
इन पर ही मरनेसे मिल जायेगी मुझे अमरता

१४-७-४२]

हार

प्रियतम मानता हूं हार
कौनसी मै भेंट लाऊँ, कैसे करूँ मनुहार

बंद कर दी है हजामत बढ़ गये हैं बाल
गीत लिखने लग गया होकर प्रिये बेहाल
और क्या विधि है प्रिये जिससे जताऊँ प्यार

नित्य चर्चा है तुम्हारी बस सवेरे शाम
पर न पीड़ाको बनी तुम ओरियंटल बाम
दूरही हमसे रहीं जिस भाँति है सरकार

जान देदी देश हित प्रियतम किसीने एक
यातनाओंका किसीने सह लिया उद्रेक
मैं तुम्हारे हित मरा हूँ प्रिये कितनी बार

प्राप्त हो कुछ इसलिए कुछ लोग करते त्याग
रिक्त बोतलका न कोई खोलता है काग
मै तुम्हारे नाम पर देता लुटा संसार

२९ ८–४२]

पानीका जोर

नहीं बन्द पानी होता है
बादल भी क्या फूट-फूटकर उरके छालों सा रोता है

ऊपरसे पानी आता है, यहाँ बिरहियोंका ताँता है
बह न जाय घर मेरा दुर्बल हृदय इसीसे थर्राता है
शिशु नवजात समान दिवाकर घनके अंचलमें सोता है

झड़ी असीम लगी वर्षाकी, क्या कौन सा आया साकी
नदी बहा दी है जिसने मधुशालामें मानों हालाकी
सारी दुनियाँ मस्ती लेकर लगा रही जिसमें गोता है

बूँदे नन्हीसी शरमाती धीरे धीरे वे हैं आती
मंथर गतिसे प्रथम दिवस प्रियतमा सदन में जैसे जाती
प्रणय खेतमें रसके सुमधुर मानो मदन बीज बोता है

पानी बेढब तूफानी है, या नेताओंकी बानी है
है यह जोर बहा ले जानेकी शायद इसने ठानी है
निर्धन खेत किसानोंने मेहनत करके जो कुछ जोता है

४-६-४२]

मेरे प्रियतम

करफ़ू लगा न जाओ प्रियतम
इस वेला बाहर कैसे जाओगे तुम्हीं बताओ प्रियतम

घर वाले पूछें कह देना
"मोल नहीं था झगड़ा लेना"
पुलिस ही नहीं सिविक गार्ड हैं इनसे जान बचाओ प्रियतम

यद्यपि गेहूं पास नहीं है
घीका घरमें वास नहीं है
आज दालदामें तुम जबकी छनी पुरियाँ खाओ प्रियतम

मेरा हृदय बैठ जायेगा
जीवन चैन नहीं पायेगा
खड़े-खड़े तिरछे-तिरछे तुम यों मत नैन नचाओ प्रियतम

सुन्दर यह विधान सरकारी
जागी किस्मत आज हमारी
एक रात सुखसे मेरी कुटियामें आज बिताओ प्रियतम

युद्ध बीच बम बरसाते हैं
उर्दू कवि गम बरसाते हैं
आज हमारे घरमें तुम रसकी धारा बरसाओ प्रियतम

१४-६-४२]

अनुरोध

जरमन और इंगलैंड सरीखे शान्ति भंग कर सारी
पड़ी अचानक आँख प्रियतममें मेरी और तुम्हारी
डर लगता हो अगर रातमें दिनमें आ जाओ
सबमैरीन-सा प्रेम पयोनिधि में तुम मुझे डुबाओ

आ न सको तो प्रेम-पत्र ही प्रतिदिन भेजो प्रियतम
सूरत न हो, लिखावट ही सम्मुख हो मेरे हरदम
रोता हूँ दिन-रात प्रियतमें चैन नहीं है दिल में
जैसे नेता रोते हैं मुसलिम लीगी कौंसिल में

सूखी रोटी-सा कठोर है कितना हृदय तुम्हारा
हिलते दाँतों-सा जिससे मैं बार-बार हूँ हारा
चलता नहीं तुम्हारे सम्मुख कुछ भी बस अब मेरा
हृदय चुराती हो तुम जैसे सीमा प्रान्त लुटेरा

पत्थरकी देवी-सी क्यों हो मौन अरे कुछ बोलो
अपने मुखसे गाली हीं दे दो पर मुँह तो खोलो
करो न तुम अनसुनी हमारी भीख स्नेहकी वाले
बहुत दिनोंसे तुम बैठी हो तेल कानमें डाले

२०-१२-३६]

पुरानी बातें

क्यों आज बनी अनजानी

पढ़ते थे कालेजमें हम तुम
भूल गयी वह बातें
रोज जागते रहते थे जब
आधी आधी रातें

तुम पत्र भेजतीं मुझको, मैं पत्र भेजता तुमको
मैं राजा था वसुधाका, तुम मेरे हियकी रानी

रस्टीकेट होते होते
हम बचे याद है तुमको
जाल बहुतसे हम दोनोंने
रचे याद है तुमको

तुम मुझे झाँकती रहती, मैं तुम्हें देखता रहता
जैसे भारतकी सीमा पर झाकें पाकिस्तानी

कहाँ गयी वह चितवन तेरी
प्यारी मीठी मीठी
हृदय हमारा बना दिया है
तुमने आज अँगीठी

तुम प्रेम मार्गमें रहती थी अभगागिनी बाले
क्या हुआ आज क्यों तुमने, है मुझपर भृगुटी तानी

७-८-२२]

जीवनभर मजदूर

मैं जीवन भर मजदूर रहा
बचपनमें पढ़नेके हित मैं
पुस्तकके बंडल ढोता था,
कापी, कुंजी, नोटोंके बोझों-
को लेकर मैं सोता था
दिनरात परिश्रममें दरजा-
मिलनेके ही मैं चूर रहा
कालेजमें आते ही कठिनाई
और हुई मेरी भारी
पुस्तकें बढ़ी, कुछ फीस बढ़ी
फिर बना हृदय का व्यापारी
मैं बोझ नाजका ढोनेमें
कालेज भरमें मशहूर रहा
डिगरीका, सिफारिशोंका, पत्रों-
का भारी बोझा ढोया
आशाकी दरी बिछा कर मैं
कितनोंकी ड्यूढ़ीपर सोया
मैं किन्तु सफलताके फाटक-
से बेढब कोसों दूर रहा

१५-१२-४०]

ग्रीष्मकी रात

सजनि ग्रीष्मकी है रात

विकल प्रेम समान गति है पवनकी विश्रान्त
मच्छरोंके आक्रमणसे तन हुआ आक्रान्त
द्रवित है तन जिस तरह हो मणि सुधाकर कान्त
क्या करूँ मैं बात, सजनि ग्रीष्मकी है रात

खाटपर मैं गिर पड़ा जिसभाँति पादप 'ओल्ड'
हृदयको मैं कर रहा हूँ कठिनतासे 'होल्ड'
एक क्षण भी छूटता मुँहसे नहीं जल 'कोल्ड'
विरह दावा मात, सजनि ग्रीष्मकी है रात

हूँ पड़ा जलमें मगर है प्यास बुझती ही न
स्वेद बहता है निरन्तर चैन एक घड़ी न
बह रहा हो फाउन्टेन पेन जिस तरह प्राचीन
हो गया तन मात, सजनि ग्रीष्मकी है रात

२८-५-४२]

सम्मान

मुझको न मिला सम्मान

बहुत रेडियोमें मैं बोला
मैंने लिखा छंद है रोला
प्लैटफार्मपर किया बहुत हिंदीका है अपमान

कितने लेख चुराये मैंने
अपने चित्र छपाये मैंने
हिंदीके हित पाँच आनेका कभी किया था दान

कहीं सभापति हूँ, मंत्री हूँ
भाषाका मैं हृत्तंत्री हूँ
किंतु अभी तक लोग समझते हैं मुझको नादान

[२०-८-४२]

बिजली फेल होनेपर

फेल बिजली हो गयी है

रात मेरे ही भवनमें आज आकर खो गयी है
आ रही थी वह लिये थाली मुझे भोजन खिलाने
मैं उसी दम था झपटकर जा रहा रूमाल लाने
देख पाया मैं न उनको, वह न मुझको देख पायी
रेलगाड़ीसे लड़े दोनों, धरापर हुए शायी
पेटपर रसदार जलता शाक, पूरी पेखपर थी
आँखमें चटनी गिरी जो चटपटेपनका निकर थी
बालपर सिरका गिरा जैसे ललित लोशन उड़ेला
क्रीम भुर्तेका लगा मुखपर हुआ मेरे उजेला
ले रहे हैं स्वाद सब अवयव, न रसना रसमयी है

फेल बिजली हो गयी है

[२४-११-४२]

अखबार बन्द हो गया

बंद हुए अखबार
जैसे असफल प्रेमीको हो बंद प्रेमका द्वार
कहां छपाऊंगा मैं कविता हे मेरे हृदयेश
किसके द्वारा भेजूंगा अब रससे भरे सँदेश
कहां मिलेंगे मुझे देखनेको बिवाह – विज्ञापन
जिससे प्रकट पिताओंका कन्याओंके भोलापन
सुगम पहेली सुलझाकर सोचा था रुपये पाऊँ
ले बनारसी साड़ी चुपकेसे तुमको भिजवाऊँ
काले केश करेंगे कैसे गंजापन जायेगा
दो घंटेमें बूढ़ोंका यौवन कैसे आयेगा
रसमय औषधके वर्णन पढ़नेको कहां मिलेंगे
छककर जिनसे छात्र हृदय फिर कैसे कहो खिलेंगे
नाम कभी छप जाता जिससे देख मगन होता था
इसके द्वारा बीज बड़प्पनका बढ़िया बोता था
सरल सफलताका बोलो कैसे होगा व्यापार
बंद हुए अखबार

[२०-११-४२]

सन् बयालीसमें जब राष्ट्रीय आन्दोलन जोरोंपर चला अंग्रेजी सरकारकी आज्ञासे बहुत अखबार बंद कर दिये गये।

शिशिर

हे मेरे हिय की रानी

अर्जुनके बाणोंसे बढ़कर
तिरछी चितवनसे तीखातर
बेध रहा है इस शरीरमें प्रिये शिशिरका पानी

तुम कहती हो शीघ्र नहाओ
तब चौकेमें खाने जाओ
यहाँ देख पानी बस मर जाती है मेरी नानी

प्रणय-कली क्या इससे खिलती
मुक्ति इसीसे क्या है मिलती
जाड़ेमें भी नित्य नहाना है कोरी नादानी

सिंह नहीं है नित्य नहाता
स्नान नहीं अजगरको भाता
निज शरीरपर जल उलीचना नहीं बात मरदानी

द्रुतसमीर, शीतलता, सिहरन
तब भी मैंने धोया आनन
सबसे बढ़कर मेरे जीवनकी यह है कुरबानी

[११-११-४२]

पीड़ाका मेला

कहां छोड़ जाती हो मुझको जीवनकी इस मधु बेलामें,
पवन मन्द बहता है आली, झूम रही है तरुकी डाली
रजनी रानीके नयनोंसे, फूटी किरणें काली काली
मधुकर सरसिज बीच समाया, पक्षी उतर नीड़में आया,
जैनी मत वालोंने जल्दी-जल्दी, अपना ब्यालू खाया
दफ्तरसे सब बाबू लौटे, ऐसे मानों जलमें ऑटे
मिलीं पत्नियाँ ऐसे जैसे मिलते हैं गोहोंके जोटे
सिनेमाको चलतीं नर नारी, सजे सूटसे पहने सारी
जिनपर पड़तीं हैं लोगोंकी आँखें कितनी प्यारी प्यारी
कैसी, तुम्हीं बताओ, बीतेगी पीड़ाके इस मेला में ॥

[१५-१-५४]

प्रेम संगीत

तुम अंडर-ग्रेजुएट हो सुन्दर,
मैं भी हूँ बी० ए० पास प्रिये।

तुम बीबी हो जाओ ला-फुल',
मैं हो जाऊँ पति खास प्रिये।

मैं नित्य दिखाऊँगा सिनेमा,
होगा तुमको उल्लास प्रिये;

घर मेरा जब अच्छा न लगे,
होटलमें करना वास प्रिये।

'सरविस' न मिलेगी जब कोई,
तब 'ला-'की है एक आस प्रिये।

उसमेंभी 'सकसेस' हो न अगर,
रखना मत दिलमें त्रास प्रिये।

बनियाका उपवन एक बड़ा,
है मेरे घरके पास प्रिये।

फिर साँझ सबेरे रोज वहाँ,
हम तुम छीलेंगे घास प्रिये।

मैं ताज तुम्हें पहनाऊँगा,
खुद बांधूगा चपरास प्रिये।

तुम मालिक हो जाओ मेरी,
मैं हो जाऊँगा दास प्रिये।

मैं मानूँगा कहना सारा,
रखो मेरा विश्वास प्रिये;

अपने करमें रखना हरदम,
तुम मेरे मुखकी रास प्रिये।

यह तन्मयताकी बेला है,
दिनकर कर रहा प्रकास प्रिये;

आओ हम तुम मिलकर पीलें,
'जानी-वाकर' का ग्लास प्रिये;

अब भागो मुझसे दूर नहीं
आ जाओ मेरे पास प्रिये;

अपनेको तुम समझो गाँधी,
मुझको हरिजन रैदास प्रिये

मैं और तुम

मैं केसर मिश्री बिना भंग तुम अरुण छलकती हाला,
मैं सीधा सादा अध्यापक तुम हो नवयुगकी बाला,

तुम 'टेनिस-बाल' मैं रैकेट,

तुम रेशमकी कोमल मफलर मैं हूँ पट्टूका जेकेट।
मैं एन० ई० आरका थर्ड क्लास तुम राज्यपालकी गाड़ी,
मैं खद्दरका मोटा कपड़ा तुम बनारसी साड़ी,

तुम गोरी हो, मैं श्यामल

तुम 'रोलस-रैस'-की नयी कार मैं 'फोर्ड' पुराना 'माडल'
मैं जवका हूँ मोटा सत्तू तुम हो खस्तेकी पूरी,
मैं कुंद कुल्हाड़ा बिना बट तुम हो राजिसकी छूरी,

तुम ताजी हो मैं बासी

तुम सिटी लखनऊ हो सुन्दर मैं मस्त नगर हूँ काशी।
मैं बथूआका हूँ साग और तुम हो कशमीरी केसर,
मैं 'सेशन-कोर्ट'-का अपराधी तुम बैठी बनी असेसर,

तुम कोकिल हो मैं कौवा
तुम रामतरोई हो कोमल मैं छप्पर परका लौवा।
मैं भारतीय अनपढ़ अपार तुम हो लंदनकी गुड़िया,
मैं देशी चूरन अमलवेद तुम हो कुनैनकी पुड़िया,
तुम 'मटनचाप' मैं भरता
तुम 'सिमसन' मैं 'एडवर्ड', प्रेम हित जो गयी 'किक' करता
मैं अनपढ़ हूँ बेढब गँवार तुम 'अपटूडेट' लासानी,
मैं हिंदी भाषा दीन हीन तुम हो अंग्रेजी बानी,
तुम तोप और मैं लाठी
तुम रामचरित मानस निर्मल मैं रामनरेश त्रिपाठी

आत्म परिचय

डिगरीके मैं अंबार लिए फिरता हूँ,
'रिकमेंडेशन'-का भार लिए फिरता हूँ,
हर जगह, जगह है नहीं सदा पाता हूँ,
फिरभी 'सरविस'- का प्यार लिए फिरता हूँ।
बीबी बच्चोंका भार लिए फिरता हूँ,
बेकारीका संसार लिए फिरता हूँ,
हर रोज 'वांटेड' नया देखनेको मैं,
कुछ नये नये अखबार लिए फिरता हूँ।
कविताका मैं भंडार लिए फिरता हूँ,
नायिकाभेद शृंगार लिए फिरता हूँ,
पीकर एक प्याला हाला, मधुशालासे,
टूटी वीणाका तार लिए फिरता हूँ।
कवि-सम्मेलनका तार लिए फिरता हूँ,
तुकबंदीकी भरमार लिए फिरता हूँ,
क्यों आप सभापति नहीं बनाते मुझको,
मैं कविताका कतवार लिए फिरता हूँ।

उनके पीछे मैं कार लिए फिरता हूँ,
अरमानोंके उपहार लिए फिरता हूँ,
बोलें न सही 'फिक्र' ही करदें वह मुझको,
बस यह इच्छा सरकार लिए फिरता हूँ।
मैं दिलमें उनका प्यार लिए फिरता हूँ,
फिर भी दिलमें एक 'खार' लिए फिरता हूँ,
लेली है मैंने खींचके उनकी फोटो,
मैं पाकेटमें दिलदार लिए फिरता हूँ।
मैं उजड़ा एक संसार लिए फिरता हूँ,
स्मृतियोंका भंडार लिए फिरता हूँ,
कितना खोजा तुम नजर नहीं आते हो,
फिरभी मैं आँखे चार लिए फिरता हूँ।

[श्री भगवती चरण वर्माकी कविता "मैं जगजीवनका भार लिए फिरता हूँ" की पैरोडी]

मीटरका रहस्यवाद

पाँडे बूझि भरौ तुम पानी,
तुमको खबर नहींका पांडे 'मीटर' अब बैठानी।
टिकस बढ़ावनकी बिरियाँ तो खूब कीन मनमानी,
पानी देत मनुसपलटीको याद आवत है नानी।
अहिरा रोवे खड़ा दुआरे कैसे सानौ सानी,
कूंआ झाँकैं लोग—लुगाई सारी कला भुलानी।
समुझावत हैं बाबू बैठे जलदी जैहै पानी,
कैसे रोज रगड़िहौ साबुन मेरे हियकी रानी।
शौचालयमें कठिनाईसे मिलिहै संतो पानी,
'ट्वायलेट-पेपर' बेगि मंगाओ करौ न आनाकानी।
पानी बिना नहीं घट बोलै, सबद न एकौ आनी,
कहैं कबीर सुनो हो साधो यह पद है निरबानी।

बीती विभावरी

बीती विभावरी जागरी।
छप्परपर बैठे कांव कांव,
करते हैं कितने काग री।
तू लंबी ताने सोती है,
बिटिया 'माँ-माँ' कह रोती है,
रो-रोकर गिरा दिये उसने,
आँसू अबतक दो गागरी।
बीती विभावरी जाग री।

बिजलीका भोंपू बोल रहा,
धोबी गदहेको खोल रहा,
इतना दिन चढ़ आया लेकिन,
तूने न जलायी आग री।
बीती विभावरी जाग री।

उठ जल्दी दे जलपान मुझे,
दो बीड़े दे—दे पान मुझे,
तू अबतक सोयी है आली,
जाना है मुझे प्रयाग री,
बीती विभावरी जागरी।

[प्रसादजीकी कविताकी पैरोडी]

मेरी इच्छा

यह इच्छा थी कि मैं होता लिफाफा,
उसे होठोंसे तुम फिर 'सील' करते।
अधरका मद-भरा मधु पान करता,
धरापर स्वर्गका आनन्द पाता।
अगर 'पफ' मैं कहीं हो जाऊँ सुन्दर,
परस कर लूँ कपोल उनके सुकोमल
अगर हो जाऊँ मैं चश्मेका 'क्रिस्टल'
तो देखूँ नित्य उनकी आँख चंचल।
अगर खटमल बना देता हमें 'गाड',
उन्हींकी खाटमें हम जाके बसते
वह आकर मस्त होकर उसपे पड़ते,
बदनसे रातभर उनके लिपटते।
अगर होता कोई बढ़िया चुरुट मैं,
जला करता, अधर पर चूम लेता
हृदयमें उनके डेरा डाल देता,
जिगरमें बैठकर विश्राम लेता॥

बिजली

भारतमें अंगरेजों जैसी काले घनमें बिजली चमकी,
लग गयी मेंहकी झड़ी, विरहिणीको याद आयी प्रीतमकी।
मिरजापूर और बनारसमें, कजलीकी मस्ती आ धमकी,
बूढ़ों, बच्चों, बीमारोंको बढ़ गयी शिकायत बलगमकी।
हो पेट महाजनका जैसे नदियोंकी फैली काया है,
काशीकी सड़कोंपर प्रयागका, संगम उठकर आया है।
कुछ सड़कोंपर 'नेचर' ने रबड़ीका नव थाल सजाया है,
स्कूली बालक मगन हुए, छुट्टीका ध्यान समाया है।
है वक्त नहानेका लेकिन धोती है गीली पड़ी हुई,
चूल्हेमें आग नहीं जलती बीबी है बेबस खड़ी हुई।
खपड़ेके घर है टपक रहे, छप्परकी टेढ़ी कड़ी हुई,
बर्षा सबको सुख देती हो, पर मुझे मुसीबत बड़ी हुई।

संपादककी होली

आफिसमें कंपोजीटर, कापी कापी चिल्लाता है,
कूड़ा करकट रचनायें पढ़, सिरमें चक्कर आता है।
बीत गयी तिथि पत्र न निकला, ग्राहकगणने किया प्रहार
तीन माससे मिला न वेतन, लौटा घर होकर लाचार।
बोलीं बेलना लिए श्रीमती, होलीका सामान कहाँ
छूट गयी हिम्मत, बाहर भागा, मैं ठहरा नहीं वहाँ,
चुन्नी, मुन्नी, कल्लू, मल्लू, लल्लू सिरपर हुए सवार,
संपादकजी हाय मनायें कैसे होलीका त्योंहार।

आजकलकी शिक्षा

रटते सदा ही रहे जीवनमें पुस्तक ले,
जैसे बरसात में रटन चेक गन की
नाम ले कवायदका कूदे उछले भी खूब
होती है उछल कूद जैसे कपि सनकी

फिर भी हैं बुद्धिहीन पूछता न कोई हमें
बल भी न, भागते हैं चर्चा सुन रनकी
मिलती है शिक्षा हमें जीवनमें ऐसी,
कुछ होती है उन्नति यहाँ तनकी न मनकी।

मैं

मुझे खींचते हैं वह इधरसे उधर किसी ऊँटकी मानो नकेल हूँ मैं,
मुझको ठुकराते हैं प्यारसे वह, उनको फुटबालका खेल हूँ मैं,
रहते हैं जलाते मुझे जो सदा उनके लिए मिट्टीका तेल हूँ,
नित नाज का बोझ जो ढो रहा हूँ नवनेहकी 'बेढब' रैल हूँ मैं।

मनसून

मनसूनकी जूनमें आयी हवा घनघोर घटाकी छटा यहां है,
नहीं रातमें 'मून' है, 'नून' में भी तम ही तम देखो जहां वहां है,
कुछ हो जो खता तुम करना क्षमा, 'रिवोल्यूशनमें' दिलका जहां है,
बरसातका 'बेढब' 'सीजन' है कुछ पूछो न 'रीजन' को कहां है।

अछूत

गाटर ज्यों खंभपर, टाँगा जिमि रंभपर,
अनलका अंभपर, होता जिमि राज है।
काँटा जिमि राहपर, चंदा तनखाहपर,
केसर कस्तूरीके ऊपर जिमि प्याज है।
काई जिमि कुंडपर छूरी जिमि मुंडपर,
मिर्चा जिमि 'उंड'-पर सरपर ज्यों खाज है।
'टीचर' ज्यों 'डंस'-पर 'हंटर' ज्यों हंसपर,
त्यों अछूत बंसपर आज द्विजराज है।

जवानी

आँखें भी धँसी हैं, गाल बैठे शुष्क आम जैसे,
कमर नहीं है एक पतली कमानी है,
तेजसे विहीन काया छीन देखनेमें दीन,
चेहरेका रंग जैसे पोखरेका पानी है,

काठसा शरीर लेके प्रेम पाठ पढ़ते हैं,
साठके समान ठीक आती नहीं बानी है;
सूरत जनानी मले मुखपे 'हिमानी-सनो',
भारतके युवकोंकी 'बेढब' जवानी है।

नव-भामिनी

पोते 'पोमेड' मले मुख 'पौडर' ऐनक आँख चढ़ी 'गजनैनी',
आननपै करके 'करचीफ' धरें, जनु जर्म बचावत जैनी;
टेढ़ा करैं मुख ऐसा बनायके भोजपुरी मनो खात है खैनी,
कूदती ये स्कूल चलैं 'मृग-गामिनी' भामिनी 'मेढक बैनी'

लीची

यह भातसा गात है फूला हुआ अथवा पकी रोटी तंदूरकी है,
जग जाता जहान सुने बरबैन सुबानी मनौं तमचूरकी है।
कच कालेसे बालके है ये बढ़े कि यह लंबीसी लूम लंगूरकी है,
मुखपे हैं मुहाँसे ये लाल घने मनौं लीची मुजफ्फरपुरकी है।

हमारा हास्य साहित्य

बेढब की बहक	बेढब बनारसी	२)
बिजली	,, ,,	२।।)
मसूरी वाली	,, ,,	१।।)
बनारसी एक्का	,, ,,	१।।)
हास-परिहास	,, ,, सुधाकर पांडेय }	२।।)
दाँव पेंच	नटवर	२)
[illegible]	राजनारायण चतुर्वेदी	१।)
भारतेन्दुकालीन व्यंग परम्परा	ब्रजेन्द्र पांडेय	२।।)

प्राप्ति स्थान—

प्राची प्रकाशन (प्राइवेट) लि०

मुँगेर